भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 23 | उदयपुर गुरूवार 15 दिसंबर 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

रोटी के आकार में ब्रह्मांड और पर्तों में धरती-आकाश

- मालती शर्मा -

पूना की मालती शर्मा लोकसांस्कृतिक जीवनधर्मिता की सुविज्ञा थीं। उनका यह आलेख अब प्रकाशित है।

आज के मंगल, शनि और चन्द्रमा पर जाने वाले समय और स्थान की दूरियां जीतने वाले यानों, उपग्रहों के अपूर्व आविष्कार अपनी जगह हैं पर इस विश्व में 'रोटी' से बड़ा और रोटी जैसा आविष्कार आजतक नहीं हुआ और न रोटी बनाने का आविष्कार करने वाले आविष्कर्ता से बड़ा और कोई आविष्कर्ता ही।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर के गणित विभाग की अध्यक्षा, मेरे पति डॉ. के. सी. शर्मा की शिष्या डॉ. सरिता ठकार ने कभी यह बात कही थी और वे आज भी उस पर कायम हैं कि रोटी का दुनिया का सबसे बड़ा आविष्कार करने वाले में आविष्कार की अद्‌भुत प्रतिभा थी, हमें उसकी मनीषा की दाद देनी चाहिए और यह खोज करनी चाहिए कि रोटी बनाने का यह अनोखा आविष्कार किसने किया?

और मैं कहती हूँ कि रोटी इस दुनियां का सबसे बड़ा, अकेला आविष्कार हो भी क्यों नहीं? क्योंकि रोटी ही इस सृष्टि का युग्मराग है, जीवन है। हमारी बहुत सारी खाने की चीजें एक हाथ से बन जाती हैं जबकि रोटी बनाने को दोनों हाथ, युग्मराग के दोनों तार लगते हैं। ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ, चना की 'हाथ की रोटी' ब्रज क्षेत्र में जिन्हें 'पनपथी' कहते हैं, दोनों हाथों से बनती हैं। लोक परम्परा में रोटी को बेलने का बेलन कई अर्थों का प्रतीक है पर किसी वक्त के स्त्री के रौद्र रूप और व्यंग्य चित्रों में स्त्री के हाथ में बेलन मिसाइल होता था।

विश्वभर में रोटी लोकजीवन की सारी खाने पीने की चीजों, व्यंजनों के लोक में, सिंहासन पर बैठी महारानी है। दिहाड़ी मजदूर के, कामगार वर्ग के फटे कपड़े के मजबूत टुकड़े की पोटली में बँधे 'भोजन-रोटी और प्याज' में, रोटी ही जीने का आधार है, जीवन है।

विश्व का आधे से अधिक हिस्सा चावल खाने वाला है। पर वक्त के तीन वक्त के मुख्य भोजनों में किसी एक वक्त का भोजन, रोटी के बिना पूरा नहीं होता। चावल खाने वाले तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल में भी सुबह दोपहर के नाश्ते में दोसा, उत्तपा के रूप में रोटी रहती है। देश के लगभग सभी प्रान्तों में, पर्व, त्यौहार, उत्सवों में रोटी का ही रूप 'पूरी' एक विशेष व्यंजन है। हिन्दीभाषी प्रदेशों में तो कभी दावतों का मतलब ही पूरी साग ही लड्डू के साथ हुआ करता था। महाराष्ट्र में गुड़ चने का पूरन परी 'पूरनपोळी' हर पर्व त्यौहार उत्सव के व्यंजनों की रानी है। मेहमान की मेहमानी है। देवी-देवताओं का नैवेद्य है। महाराष्ट्र की रोटी पूरनपोळी को आज भी कोई दूसरा व्यंजन उसके सिंहासन से नीचे नहीं उतार सका है।

हर देश के प्रान्तों, जनपदों, अंचलों, ग्रामों की रोटी के विविध नामरूपों प्रकारों पर एक-एक महाकाव्य लिखा जा सकता है जिसकी नायिका रोटी होगी। रोटी के असंख्य नाम रूप रोटी, फुलका, लुचइयां, मांडे, सुहार दशमी, भाखरी, धपाटी, उड़ीनुच्चु, साटोश्यां अपने पर लिखने वालों की बाट जोह रहे हैं। इनमें हिन्दी भाषी प्रदेश और महाराष्ट्र की रोटियों पर लिखे महाकाव्य बड़े होंगे पर आज ये नाम नहीं 'चपाती' ही रोटी की पहचान बनी है। हिन्दी भाषी प्रदेशों के तीनों समय के मुख्य भोजन में रोटी और उसके अन्य रूपों का ही राज है और यह भी सत्य है कि एक दूसरे प्रान्तों से जितना आदान-प्रदान रोटी का और उसके रूपों का हुआ है अन्य किसी व्यंजन का नहीं। मेरे मँझले भाई, 'पृथ्वी' मिसाइल के निदेशक डॉ. वी. के. सारस्वत को 'सिन्धी रोटी' बहुत प्रिय थी और रोटी के इस एकछत्र राज का मूल कारण है कि खाने के व्यंजनों में रोटी, सृष्टि का युग्मराग है। रोटी अपने आकार की गोलाई में पूरा ब्रह्मांड है। रोटी की दो पर्तें, धरती और आकाश हैं। दोनों के बीच बसा यह लोक है जो सृष्टि के युग्मराग रोटी का स्वाद ले भूखे पेट भरता, रोटी को भगवान बनाता है। मराठी भाषा को 'आदी पोट्रोबा, मग, बिठोबा' और हिन्दी को 'भूखे भजन न होय गोपाला' मुहावरा देता है।

चौकोर रोटी, सृष्टि की चारों दिशाओं की प्रतीक है। लगभग पूरे विश्व में खाई जाती 'बैड' भी चौकोर रोटी हैं। उत्तर भारत, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब में तिकोनी रोटी 'परांठा', सिन्ध की तिकोनी रोटी 'सिन्धी रोटी' त्रिगुणात्मक प्रकृति के तीन गुण, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, मनुष्य के मस्तिष्क की तीन अवस्था- जागृति, स्वप्न, तुरीय है।

हमारे जीवन दर्शन के विश्व के ब्रह्मांड के सारे रूप और गुण रोटी में समाए हैं। समय के तीन काल भूत, वर्तमान, भविष्य की प्रतीक हैं। हमारे खाने के सभी व्यंजन, पकवान, मिठाइयां, नमकीन, समोसा, कचौरी, खीकरी, पापड़ी, गुझिया, टिकिया, चढ़ियां, बड़े, दही बड़े या तो गोलाकार हैं, या अर्धगोलाकार और या फिर तिकोने। कुछ नमकीन पकवान लम्बे भी हैं जो सृष्टि के युग्मराग के लम्बे तार ही हैं। पकवानों को बना सेकते समय कढ़ाई में छुन छुन में इनका युग्मराग ही बजता है। गूंजता है। रोटी के, फुलके के, दो परत फूलने पर युग्मराग का स्वाद होता है।

इतने सारे ढेर से पकवानों के साथ सवाल तो घूमफिर कर हमारी जिन्दगी में 'दो रोटी' पर ही आता है। समाज में आज भी 4-6-8 रोटी खाने वाले लोग हैं पर डाइटिंग के चलते, रोटियों की संख्या दो पर आकर टिक गई है और ऐसा हो भी क्यों न! 'दो रोटी' प्रत्यक्ष में सृष्टि का युग्मराग है।

मेरी दादी कभी दो रोटी से तीसरी रोटी नहीं खाती थीं। पर, वे 'दो रोटी' मां को उनके मुताबिक 'गत की सी' मतलब इतनी मोटी बनानी होती थीं कि उनका पेट भर जाये। लोक में एक सेर की, तीन रोटी और तीन सेर की चंइयां या चंदिया एक दूसरे की जरूरतें उसे खाने की बता, एक सेर की तीन रोटी सूरे को खिला तीन सेर की चंइयां खुद खा लेने की इच्छा की मजेदार कहानी भी है। वह भी ससुर बहू की।

वैसे भी एक ससुर का बहू की एक रोटी से पेट नहीं भरता और एक रोटी अधूरा राग, विपन्नता का प्रतीक है। किसी समय में, कुछ गाँवों में शायद आज भी बची हो, 'एक रोटी' टहलुओं, कामगार वर्ग का मेहनताना थी। दो पहर शाम, अपने काम निबटाकर यह वर्ग मालिकों के यहां रोटी लेने जाता था। मेरे कानों में आज भी पुनियां मेहतरानी की आवाज गूंजती है- 'बाई! रोटी दे देउ'। यह एक रोटी। प्रति व्यक्ति के काम के हिसाब से मिलती युग्मराग का एक तार ही थी जिसे यह वर्ग अपने घर ले जाकर रोटी के लगामन/लगावन के साथ साग भाजी चटनी, नमक, प्याज, मिर्च कुछ भी नहीं तो पानी के घूंटों के साथ खाकर सृष्टि का युग्मराग पूरा करता रहा है। कभी कभी यह लगभग उसे मालिकों के यहां से भी मिल जाता था।

खाद्यान्नों में रोटी ही सबसे अधिक अनाजों की बनती है। वह अपने वर्तुल, त्रिकोण और चौकोर आकारों में सारे अनाजों, गेहूं, जौ, चना, मटर, ज्वार, मक्का, बाजरा आदि से मेल मिलाप कर सभी को अपने में समेट लेती है। सृष्टि के युग्मराग का उद्‌गम 'मां' भी रोटी है। यह मैं नहीं, मरहूम पर, मुक्कमल शायर निदा फाजली कहते हैं-

'बेसन की सोंधी रोटी पर
खट्‌टी चटनी जैसी मां'

ठीक ही कहा है फाजली साहब ने मां और रोटी दोनों जीवनदायिनी, युग्मराग हैं। हमारे जीवन के आधार राम-कृष्ण में बालक राम का मुख तो 'दधि ओदन' दही भात से लिपटा है पर 16 कलाओं के अवतार हर घर आंगन में खेलते कृष्ण कन्हैया, बालकृष्ण के हाथ में मां यशोदा की दी और मुस्लिम कवि रसखान के सवैया में लिखी 'माखन रोटी है। जिसे वे पीरी कछोटी पहने खेलते खाते आंगन में घूम रहे हैं और जिसे बड़े भाग वाला काग उनके हाथ से ले जाता है।' बकौल रसखान- 'काग के भाग कहा कहियो हरि हाथ सूं ले गयो माखन रोटी।'

शायद कृष्ण के हाथ की माखन रोटी और 'ब्रैड बटर' में साम्य के कारण ही कुछ लोग कृष्ण और क्राइस्ट को एक कहते हों! इस साम्य की बात जो भी हो पर मुस्लिम कवि रसखान ने अपने सवैया में माखन रोटी खाते, खेलते, बालकृष्ण की जो छवि खीचीं है वह सृष्टि का युग्मराग हाथ में लिए धूल धूसरित भारतीय लोक परम्परा के 'लाल' की छवि है।

रोटी बनाने की तकनीक का आविष्कार हुए न जाने कितनी सदियां बीत गईं। आज भी रोटी के नए रूप आकार आ रहे हैं पर रोटी बनाना, अच्छी रोटी बनाना कोई सहज काम नहीं विशेष रूप से गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा और पंजाब की विश्व प्रसिद्ध 'मक्के दी रोटी', 'हाथ की रोटी' जिसका एक नाम 'पनसथी' भी है, इसे बनाना, नरम और फूली-फूली बनाना, काफी कठिन है।

मेरी सासू-मां जिनकी मां उन्हें बचपन में ही छोड़ गईं थीं, बताती थीं कि उनकी चाची उन्हें गोबर और मिट्‌टी सान कर हाथ की रोटी बनाने का अभ्यास कराती थीं। किसी समय में शायद आज भी कुछ घरों में यह बचा हो, रोटी बेलना ससुराल आई नई बहू की पाककला का परीक्षण था!

मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि पापड़ बेलने की कठिनाई पर तो हमारी भाषा में मुहावरा है पर रोटी बनाने की कठिनाई, उसकी किल्लत पर कोई मुहावरा क्यों नहीं? जबकि चुपड़ी हुई दो रोटी मिलने के आनंद पर मुहावरा है- 'चुपड़ी और दो-दो!'

मुझे लगता है कि, लोकपरम्परा ने सृष्टि का युग्मराग जीवनदायिनी रोटी को बनाने में लोकमन उसे बनाने में कोई कठिनाई देख उसे बनाने से विरत न हो जाय, इसलिए रोटी बनाने की कठिनाई पर कोई भी मुहावरा नहीं दिया। उसे कहीं भी बना लेने की सहजता पर मुहावरा दिया है-'चंदिया रोटी, मुँह बरोसी';। रोटी सेकने की मुझे इस समय संयुक्त परिवार की बहू अपनी एक सहेली के बच्चे की बात याद आ रही है जो उसने अपनी मां को रोटी बनाने में देर होती देख भूख लगने पर कही थी- 'मौसी आम अमरूद सेब की तरह रोटी का पेड़ क्यों नहीं होता कि उससे जब चाहें रोटी तोड़ कर खा लें'।

- शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

लोकदेवताओं का राजस्थान

राजस्थान के लोकदेवताओं पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं और पत्र-पत्रिकाओं में भी समय-समय पर जो सामग्री प्रकाशित हुई वह भी विपुल है। ऐसे में प्रो. मिश्रीलाल मांडोत लिखित 'राजस्थान के लोकदेवता' नामक पुस्तक भी उसी सामग्री का पुनर्लेखन ही है। लोकदेवताओं पर विविध विश्वविद्यालयों में भी जो शोधकार्य हुए हैं उनकी सूची भी कम लम्बी नहीं है। यदि उन सबकी जानकारी एकत्रित की जाय तो वह कार्य भी एक तरह की शोध में ही शुमार होने लग गया है।

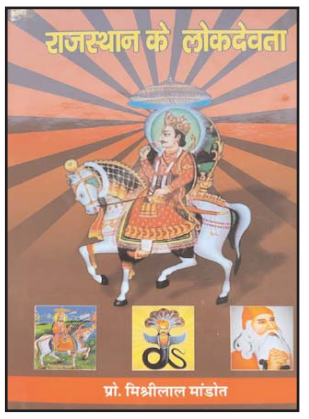

एक-एक लोकदेवता पर भी कई विद्वानों ने अच्छे कार्य किये हैं। कुछ अच्छे कार्य विविध संस्थाओं ने भी करवाकर प्रकाशित किये हैं लेकिन जहां-जहां लोकदेवताओं की मान्यता, पूजा-प्रतिष्ठा, गायन-वादन, मान-मनौती के साथ जो जनजीवन आस्था एवं विश्वास से जुड़ा हुआ है, उसका सटीक दिग्दर्शन ही लोक-संज्ञा से विभूषित लोक के देवता का सही और असली मूल्यांकन है जिसे बाहर लाने का श्रम-पुरुषार्थ नहीं के बराबर हुआ है। यह कार्य बुद्धि और विवेकसाध्य, पुरुषार्थसाध्य तथा निरन्तर भ्रमणसाध्य आंखों से देखा, स्वयं भोगा और जिन-जिन को अप्रत्याशित उपलब्धि हांसिल हुई है उनसे रू-ब-रू होकर विवेचित करने का खर्चसाध्य भी है। तब ही प्रामाणिक तथा असल कार्य की परिणति बनती है।

इस दृष्टि से प्रो. मांडोत का श्रम-परिश्रम तो अभिनन्दनीय ही कहा जाना चाहिये जिन्होंने कुल 148 पृष्ठों में 267 फुटनोटों के माध्यम से क्रमश: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख लोकदेवता, लोकदेवताओं का सामाजिक क्षेत्र में योगदान, सांस्कृतिक जनजागरण में योगदान शीर्षक चार अध्यायों और अंत में मूल्यांकनपरक टीप देकर घर बैठे सारी जानकारी सुलभ की है।

अच्छे आकर्षक आवरण में साहित्यागार, चौड़ा रास्ता, जयपुर से प्रकाशित यह पुस्तक 250 रूपये कीमत वाली है। **- डॉ. तुक्तक भानावत**

'साहित्य गुंजन' का बाल साहित्य विशेषांक

'साहित्य गुंजन' का यह विशेषांक बाल साहित्य सामग्री का दस्तावेज है। इसमें बाल मनोविज्ञान, आधुनिक बाल साहित्य कैसा हो, बाल साहित्य की आवश्यकता पर गवेषणात्मक और मूल्यपरक सामग्री है। बाल साहित्य पुरोधा राष्ट्रबंधु और मयंक पर महत्वपूर्ण सामग्री है। अतिथि सम्पादक राजकुमार जैन राजन ऐसी महत्वपूर्ण सामग्री संचयन के लिए निश्चित रुप से साधुवाद के पात्र हैं। जितेंद्र निर्मोही के सम्पादन में 73- ए, द्वारिकापुरी, सुदामा नगर, इंदौर- 422009 से प्रकाशित 112 पृष्ठीय नवम्बर 2022-जनवरी 2023 के संयुक्त अंक के रूप में यह विशेषांक 150 रूपये मूल्य लिये है। **- जितेंद्र निर्मोही**

प्रार्थना 'पूर्ण काम' की

- बनवारीदत्त जोशी -

गुरुदेव की प्रार्थना में एक पंक्ति पर मेरा ध्यान गया-

करिये कृपा गुरुदेव दास को अटल भक्ति दीजे।
युक्ति मुक्ति कर दान को 'पूर्ण काम' कीजे।।

गुरुदेव से प्रार्थना की गई है कि हमें पूर्ण काम वाला बनावें। हमारी कोई कामनाएं न रहें। कामना विहीन जीवन अत्यन्त सरल, शान्त और समस्याओं से रहित होगा। मुख्य रूप से कामनाएं तीन प्रकार की होती हैं- (1) पुत्रेषणा (2) वित्तेषणा (3) लोकेषणा।

रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य- ये सब हमारी आवश्यकताएं हैं। इनकी पूर्ति होनी ही चाहिये किन्तु ये अनन्त हैं। इनकी पूर्ति न होने पर जीवन में क्लेश, असंतोष, विवाद, संघर्ष और दु:ख ही होता है। आयु के उत्तरार्द्ध में पुत्रेषणा तो नहीं रहती किन्तु वित्तेषणा कुछ अंशों में बनी रहती है। सर्वाधिक समस्याओं की जड़ लोकेषणा होती है। पद की लालसा से व्यक्ति विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का पदाधिकारी बनना चाहता है। राजनीति में नेता पद पर बना रहना चाहता है। उस पर बने रहने के लिए जोड़-तोड़, छल-कपट का सहारा लेता है।

गीता में कृष्ण अर्जुन को समझा रहे हैं- आसक्ति से काम उत्पन्न होता है। काम से क्रोध प्रकट होता है। क्रोध से मोह और मोह से स्मरण शक्ति का विभ्रम हो जाता है। जब स्मरण शक्ति भ्रमित होती है तो बुद्धि नष्ट हो जाती है। इसीलिए व्यक्ति राग तथा द्वेष से मुक्त होकर अपनी इन्द्रियों को संयम द्वारा वश में करने से भगवान की 'पूर्ण कृपा' प्राप्त कर सकता है। यह पूर्ण कृपा ही 'पूर्ण काम' होने का आशीर्वाद है।

मरुभूमि के अमिट गौरव रामरतन कोचर

बीकानेर के रामरतन कोचर महात्मा गांधी के सत्य, सत्याग्रह और स्वदेशी से प्रभावित एवं क्रान्तिकारी सुभाषचन्द्र बोस से प्ररित थे। वे प्रखर स्वतंत्रता सेनानी, दबंग राजनेता एवं मूल्यनिष्ठ निर्भीक पत्रकार थे। ग्राम, गरीब, कृषक और दलितजन की पीड़ा से संवेदित वे नि:स्वार्थ समाजसेवा और देश-प्रेम के लिए समर्पित रहे। धर्म और अध्यात्म के प्रति भी वे सदैव अनुप्रमाणित बने तथा बहुआयामी विरल व्यक्तित्व लिये रहे।

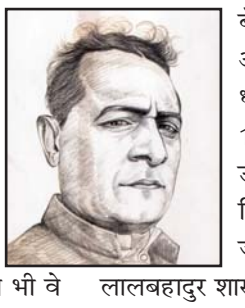

यहां के ओसवाल जैन परिवार में 20 दिसम्बर 1906 को जन्में कोचरजी का व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त सादा, सरल एवं सहज रहा। वे प्रतिदिन नित्य-नियम एवं देव-दर्शन किये बिना भोजन नहीं करते थे।

बीकानेर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति के सदस्य के रूप में राज्य की राजनीति में अग्रणी भूमिका निभाते वे कांग्रेस के पर्याय ही बन गये।

सन् 1951 से 1963 तक का काल तो 'कोचर युग' ही माना जाता था। यह काल उनकी संगठन-क्षमता, नेतृत्व-कौशल, संघर्ष एवं निस्वार्थ-सेवा के लिए जाना जाता है।

कोचरजी 1928 में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा कांग्रेस सेवादल में दीक्षित हुए। 1943 में प्रजा परिषद से जुड़े। स्वाधीनता समारोह का संयोजन एवं नेतृत्व कर लार्ड माउण्ट बेटन के बीकानेर आगमन पर तिरंगा-ध्वज-प्रदर्शन किया। 1956 में लूणकरणसर उप चुनाव में जीतकर विधायक बने। पं. जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, जगजीवनराम, सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में रहे।

आजादी के पूर्व चली आ रही खाद्यान्न किल्लत और गांवों में अकाल के समय अन्न-पानी और चारे की समस्याओं के समाधान के लिए गांव-गांव, ढाणी-ढाणी घूमकर प्रभावी योगदान देने में कोई कसर नहीं रखी। जलोत्थान योजना, मेडिकल कॉलेज और विविध विकास परियोजनाओं से लकदक बीकानेर के विकास में उनका योगदान सर्वोपरि रहा। सार्वजनिक न्यायोचित कार्य के विरूद्ध उनकी आवाज अपने शासन के विरूद्ध भी सचेत रही।

सुखाड़िया गुट को कमजोर करने के लिए कोचरजी के खिलाफ षड़यन्त्र कर उन्हें अपराधी प्रमाणित करने और न्यायालय की शरण लेने वालों को भी उन्होंने जबर्दस्त पटकनी दी। बीकानेर से प्रकाशित 'सेनानी' और जयपुर के 'सन्देश' में उनका जमीनी योगदान रहा। 02 अक्टूबर 1955 को चिरंजीव जोशी के सम्पादकत्व में बीकानेर से प्रकाशित 'गणराज्य' को बाद में कोचरजी ने ही सम्पूर्ण जिम्मेदारी से सम्भाला।

कोचरजी के कुशल सम्पादन के फलस्वरूप 'वल्लभ सन्देश' द्वारा किये गये जैनएकता के प्रयास के तहत भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण वर्ष (1974-75) में सकल जैन समाज का बोध चिन्ह और एक ध्वज सर्वमान्य हुआ।

15 मार्च 1982 को जयपुर में 75 वर्ष की आयु में उनका महाप्रयाण हो गया। उनके सुपुत्र विजयकुमार कोचर ने अपने पिताश्री की स्मृति में नोखा रोड़ पर उनकी प्रतिमा स्थापित कराई। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 24 फरवरी 1986 को उसका अनावरण करते रामरतन कोचर सर्कल का शुभारम्भ किया।

संस्कृत अकादमी की अध्यक्ष सरोज कोचर ने बताया कि उनके दादाजी की स्मृति में प्रतिवर्ष उनकी जयन्ती पर इक्कीस हजार रूपये का साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र का पुरस्कार तथा विकलांगों को ट्राईसाइकिल एवं छात्रोपयोगी सामग्री का वितरण कर उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाये हुए हैं।

- डॉ. सतीश-डॉ. कविता मेहता

क्या है क्रिप्टोकरंसी ?

क्रिप्टोकरेंसी का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है। भारत में हर 6 शहरी लोगों में से एक के पास क्रिप्टोकरंसी है। महामारी के दौरान यह मुद्रा युवा वर्ग में काफी लोकप्रिय हो गई। 3 सितम्बर 2020 को प्रधानमंत्री का ट्विटर खाता हैक कर राहत कोष के लिए क्रिप्टोकरंसी में दान देने की अपील की गई।

क्रिप्टोकरेंसी एक वर्चुअल-डिजिटल करेंसी है। इसे किसी भी देश की सीमाओं में बांध नहीं सकते। आभासी दुनिया की मुद्रा रुपया ,डॉलर, यूरो, पाउंड आदि को हम देख सकते हैं। छू सकते हैं। किन्तु क्रिप्टोकरेंसी की कहानी अलग है। इसे छापा नहीं जाता है। यह करेंसी इंटरनेट पर प्रयुक्त होती है। इसे पारंपरिक मुद्रा के विकल्प के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है। बिटकॉइन, ईथेरियम, रेडकॉइन, सियाकॉइन, सिस्कॉइन, मोनेरो, रिप्पल जैसी लगभग 14,000 क्रिप्टोकरेंसी आज प्रचलन में है।

क्रिप्टोकरेंसी कंप्यूटर की मदद से सृजित की जाती है। इसे रूपए की तरह छाप नहीं सकते। इसका सृजन करने के लिए माइनिंग का सहारा लेना पड़ता है। बड़े-बड़े कंप्यूटर एक साथ एल्गोरिथम को हल करते हैं तो उसे माइनिंग कहते हैं। जो एक्स्पर्ट्स यह काम करते है उन्हें माइनर कहते है। जब माइनर माइनिंग करने में सफल हो जाता है तो क्रिप्टोकरेंसी सृजित हो जाती हैं। इस प्रक्रिया में बहुत ज्यादा इलेक्ट्रिसिटी का उपभोग होता है।

क्रिप्टोकरंसी प्राप्त करने के दो तरीके हैं। प्रथम, यदि व्यक्ति के पास गणना क्षमता है तो वह माइन करके क्रिप्टोकरंसी बना सकता है। गणना क्षमता का तात्पर्य कंप्यूटर पर एल्गोरिथम को हल करने की योग्यता से है। इस तरह स्वयं क्रिप्टोकरेंसी सृजित कर सकता है। दूसरा एक्सचेंज से क्रय कर सकते हैं। जिस तरह स्टॉक एक्सचेंज से अंशों का क्रय-विक्रय कर सकते हैं, वैसे ही ये क्रिप्टोकरंसी इन एक्सचेंज से क्रय की जा सकती हैं। क्रिप्टोकरेंसी को चार बकेट मे बाँट सकते है - स्टैबलकॉइन, माइनिंग आधारित टोकन, सिक्युरिटी टोकन तथा यूटिलिटी टोकन।

क्रिप्टोकरेंसी डिजिटल वॉलेट में रखी जाती है। इसका कोई भौतिक स्वरूप नहीं होता। यह एक अदृश्य संपत्ति होती है। इसका लेनदेन रुपए की तरह नहीं होता है, केवल खाते में डेबिट और क्रेडिट होती है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने अब तक किसी भी क्रिप्टोकरंसी को मान्यता नहीं दी है। फिर भी समाज के एक वर्ग विशेष में बड़े स्तर पर व्यवहार हो रहे है। सरकार इसको हतोत्साहित करना चाहती है।

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत

आईआईटी रूड़की पर जारी हुआ 175 रूपये का स्मारक सिक्का डॉ. भाणावत के संग्रह में

उदयपुर (ह. सं.)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रूड़की ने वर्ष 1847 में इंजीनियरिंग शिक्षा प्रदान करने हेतु स्थापित हुए प्रथम संस्थान के रूप में यह अपनी समृद्ध विरासत के 175 वर्ष को 'भविष्य की ओर' टेगलाइन के रूप में मनाया।

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ तकनीकी संस्थानों में शुमान आईआईटी रूड़की ने अपनी स्थापना के 175 वर्ष पूरे करने पर भारत सरकार ने 175 रूपये का स्मारक सिक्का मुम्बई स्थित टकसाल में तैयार कर जारी किया है, जो लेकसिटी के करेंसी मेन डॉ. विनय भाणावत के संग्रह में शामिल हुआ।

डॉ. भाणावत ने बताया कि 175 रूपये के इस स्मारक सिक्के का व्यास 44 मिमी, वजन 35 ग्राम तथा सिक्के के दांतों की संख्या 200 है। यह सिक्का चतुर्थक मिश्रधातु से बनाया गया है जिसमें चांदी 50 प्रतिशत, तांबा 40 प्रतिशत, निकल 5 प्रतिशत व जस्ता 5 प्रतिशत है।

स्मृतियों के शिखर (154) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जब मैं शतरंज के खेल में घोड़ा बना

यह कोई 1956 की, बीकानेर की घटना है। मैं अपने अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के साथ वहां अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन ग्रंथालय के परिसर में रहकर रामपुरिया जैन इन्टर कॉलेज में द्वितीय वर्ष का अध्ययन कर रहा था। भाई साहब डूंगर कॉलेज में पढ़ते थे। उनके अति घनिष्ट साथियों में मनमोहन बागड़ी, ओंकार पारीक और आत्माराम शर्मा थे। मेरे को भी ये उतने ही स्नेहिल रूप में छोटे भाई सा प्यार देते थे।

ओंकारजी तो भाई साहब की शादी में कानोड़ भी आये। बाद में वे स्थायी रूप से उदयपुर बस गये जिनसे अंतिम समय तक मेरा मिलना-जुलना होता रहा। वे जात-पांत के बंधनों से मुक्त रह ओंकारश्री बन गये। अपनी दमदार वाणी और दमखम लेखनी से वे जमाने को टीसते रहे। अपने जीवनकाल में वे जैसे हर समय संघर्षों और थपेड़ों से ही हाताहूती खेलते रहे।

बागड़ीजी बीकानेर छोड़ मुम्बई जा बसे जिनसे मेरा सम्बन्ध अन्त तक बना रहा। उन्होंने वहां बीकानेरी माहेश्वरी समाज की संस्था मनमोहन रासमंडल के माध्यम से बीकानेरी परम्परा से जुड़ी सांस्कृतिक गतिविधियां तथा कई स्थायी महत्व की प्रवृत्तियां चला रखी थीं।

डांडिया खेल के साथ-साथ कुंवारी बीनणी, टीके री रात, तलाक-तलाक जैसे हास्य प्रधान नाटकों का लेखन-मंचन भी उन्होंने किया। वैवाहिक रीतिरिवाजों और मांगलिक गीतों से सरोबार 'सगाई से विदाई' पुस्तक और रासमंडल की रजत जयंती पर 'बीकानेरी व्यंजन सौरभ स्मारिका' भी प्रकाशित की। ये दोनों संग्रह उन्होंने मुझे भी भेजे। वरिष्ठ नागरिकों के लिए प्रोग्रेसिव सीनियर सिटीजन्स एसोसिएशन भी स्थापित की।

कहा जा सकता है कि बागड़ीजी को समाजसेवा और अपनों के लिए बहुत कुछ सार्थक कार्य करने की प्रेरणा विरासत में मिली। उनकी बड़ी बहिन रतनबाई दम्माणी ने बीकानेर में महिला जागृति की अग्रणी के रूप में समाजसेवी संगठनों के माध्यम से कई काम किये। पिताश्री चांदरत्नजी बागड़ी ने तो अपने पुत्र भैरोंरतन की याद में भैरोंरतन मातृ पाठशाला का निर्माण किया जिसे मनमोहनजी अन्त तक संभाले हुए रहे जो अब सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में शिक्षा समाज की अच्छी संस्था के रूप में पहचान लिये है।

बागड़ीजी जब भी हमसे मिलने आते, कुछ हटकर ऐसा कार्य करने का जिक्र करते जो लोगों से जुड़ा हुआ, उनका योगदान लिये हो और जिसकी लम्बे समय तक चर्चा होती रहे। ऐसा कार्य हो जो किसी की नकल नहीं लगे तथा जिसके लिए उन्हें नई राह और चाह से भी गुजरना पड़े।

बागड़ीजी ने बताया कि समाजसेवा के अलावा उन्हें शतरंज खेलने में गहरी रुचि थी। इतनी गहरी कि वे उसके पीछे अपनी कक्षा भी छोड़ देते। इस खेल में उन्होंने बीकानेर की चैम्पियनशिप भी जीती थी।

डूंगर कॉलेज में पढ़ते बी. ए. में उन्होंने सस्कृत विषय लिया था। विभागाध्यक्ष प्रो. विद्याधर शास्त्री थे। इस कॉलेज में मैं भी पढ़ा। छात्रसंघ के अध्यक्ष मानिकचंद सुराणा थे। उन्होंने बड़े शान से कॉलेज की सिल्वर जुबली मनाई थी और उस अवसर पर निकलने वाले बुलेटीन का मैं सम्पादक बनाया गया था। तब ही लगा था कि सुराणाजी आगे जाकर प्रांत की राजनीति में अपनी कद्दावर कामयाबी से अपनी विशिष्ट पहचान बनायेंगे।

बागड़ीजी ने बताया कि संस्कृत-गुरुदेव का मेरे पर पूरा हाथ था। उन्होंने मुझे यह छूट दे रखी थी कि मैं संस्कृत के पीरियड में भी शतरंज खेल सकूंगा। एक दिन उन्होंने मुझे कक्षा में उपस्थित रहने का आदेश दिया सो मैं पिछली सीट पर जा बैठा ताकि कभी भी धीरे से खिसक जाऊं तभी उनका स्वर गूंजा- 'नालायक आगे आओ।' गुरुदेव के नालायक और दुष्ट ये दो शब्द मेरे लिए आशीर्वाद स्वरूप थे जो वे हर कहीं उच्चरित किये देते थे।

उस दिन गुरुदेव संस्कृत नाटक मृच्छ कटिकम् पढ़ा रहे थे। प्रसंग था नायक चारुदत्त अपनी प्रेयसी के साथ जो चौपड़ खेल रहा था उसमें गोटियों की जगह दासियां खड़ी की गई थीं। कक्षा के बाद उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि तुम शतरंज का कोई ऐसा खेल प्रस्तुत करो जिसमें मोहरों के स्थान पर विद्यार्थी हों।

बागड़ीजी के लिए गुरुदेव का यह आशिष सोने में सुहागा बना। वे तो स्वयं ही कुछ-न-कुछ नया अजूबा करने की फिराक में ही रहते थे। घर जाकर जब उन्होंने चर्चा की तो सभी ने उनका मनोबल ही नहीं बढ़ाया, उनके इस कार्य में हाथ बंटाने की भी जिम्मेदारी ली। इसके लिए बीकानेर का स्टेडियम लिया गया। ग्राउंड में शतरंज का बोर्ड बनाया गया। सफेद और काले चौकोर खाने तैयार किये गये। दोनों ओर दो माइक लगाये गये। एक माइक पर स्वयं बागड़ीजी और दूसरे पर उनके सहपाठी आत्माराम शर्मा ने इस खेल का संचालन किया।

बागड़ीजी ने बताया कि 64 खाने वाले इस खेल में दो पक्ष, आधे सफेद और आधे काले होते हैं। विशेष ध्यान यह रखा कि खेल की कद काठी के अनुरूप खिलाड़ियों का चयन किया गया अर्थात् हाथी के लिए मोटे, ऊंट के लिए लम्बे तथा घोड़े के लिए नाटे तथा अच्छी और आकर्षक पर्सनलिटी वालों को बादशाह तथा वजीर का रोल दिया गया।

हाथी, ऊंट और घोड़े के मुखौटे बनाये गये जो खेल के दौरान सम्बंधित खिलाड़ियों को पहनाये गये। प्यादों के लिए बड़े पापड़ बेलने पड़े। उनके लिए जो बच्चे तैयार किये गये वे रिहर्सल के लिए एक दिन आते तो दूसरे दिन नदारद लगते।

बड़े सोच-विचार के बाद तय रहा कि छोटे बच्चों को यदि कुछ लालच दिया जाय तो उनकी रुचि बनी रहेगी अत: उनके लिए एक-एक गोली लेमनचूस की दी गई जिससे उनकी उपस्थिति बराबर बनी रही और उन्होंने दिल लगाकर अपनी प्रस्तुति दी।

मुझे घोड़ा बनाया गया। बचपन से ही मेरा घोड़ों से सर्वाधिक परिचय और लगाव रहा। पिताश्री की मृत्यु के पश्चात मां के साथ तो कभी अकेले घोड़े पर बैठकर गांवड़े जाता जहां दादा-पिता वणज करते थे। एकबार घोड़े ने मुझे गिरा दिया तो दूसरी बार अड़ पकड़ने पर ऐसी जोर की कामड़ी ठोकी कि चुपचाप दो कोस की दूरी पार करा मुझे सुरक्षित घर पहुंचा दिया। दीवाली के दिनों में मां के साथ रात तीन बजे उठकर रावले की घुड़साल में घोड़ों की लीद लेने जाता जहां विविध रंगी काबरे, चितकबरे, सफेद, काले, भूरे हष्टपुष्ट घोड़े बंधे देखता। किसी घोड़े का पीछे का एक तो किसी के दोनों पांव रस्सी से बंधे रहते।

गर्मियों की छुट्टियों में कई तरह के खेलों में घोड़ा चढ़ दड़ी खेलने का खेल खेलते। कभी मैं घोड़ा बनता तो सवार कोई और होता। कभी मैं सवार होता तो घोड़ा कोई और बनता।

अकेले में तालाब पर स्नान करने जाता तो बीच रास्ते में घोड़ा बन विविध चालों में ठुमकता, टपटपाता, दौड़ भरता लेकिन यह कभी नहीं सोचा कि किसी स्टेडियम में शतरंज खेल में घोड़ा बन सैकड़ों लोगों के बीच प्रशंसित होऊंगा। बचपन का घोड़ा अभी भी मुझसे विस्मृत नहीं हुआ है।

यादों में एक देशी कवि के ठाठ !

डॉ. भगवतीलाल व्यास उर्फ हम सबके भगवती बाबू की पहचान एक ढीलेढ़ाले अनघड़ किन्तु होनहार व्यक्ति के रूप में रही। ढीलाढ़ाला पाजामा, वैसा ही जब्बा, पेंट कमीज भी वैसा ही पर जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ लिए मित्रों में सदाबहार सहज और सरल पर व्यंग्य की टेढ़ी धारदार ऐंठ उनसे बातचीत करने पर लगने वाले को लग जाती। सब रंग लेखन करने पर भी वे एक देशी ठाठदार कवि का जीवन जीते रहे।

सन् 1988 के जुलाई माह की तिपेरी की 20-21 तारीख रही होगी, खारोल कोलोनी वाले उनके मकान में फाटक के पास ही के ठाण में एक भींडी गाय बंधी देखी। उसके दोनों सींग चन्द्राकार मुड़ाव लिये थे। गाय बहुत स्याणी लग रही थी।

भगवती बाबू ने उसे पुचकारते पंपोलते हुए बताया, भाई साहब, यह गाय बड़ी शकुनी है। अच्छे परिवार में पली तो अच्छे संस्कार वाली है।

इतने में भाभीजी आ गईं। वहीं एक कोने में एक कछुआ कुछ कचरकुचर कर रहा था। उसे दिखाती बोलीं, एक छोटा सा दूध की टीपरी जैसा कुत्ते का निशान बना देख उठा लाई। मेरे पीहर में भी गायों का दोजा था सो चंवरी में भी गाय दी।

भगवती बाबू गाय की पीठ पर हाथ घुमाते बोले, इसके एक केरड़ी हुई। जब तक रही, वधापा रहा। वो पीलाईसी रंग लिए थी। उसके एक बछड़ी हुई। वो काली थी मगर सफेद तिलक वाली। उसका नाम कपिला रखा।

मैं बोला, कपिला का उल्लेख तो इतिहास और लोकजीवन में बहुत मिलता है। ऐसी गायें बहुत कम, शुभकारी एवं देव गायें होती हैं।

भाभीजी बोलीं, वो बहुत शकुन वाली थी। गवाड़ी वाले उसका शकुन लेने आते। बड़ी रौनक थी। लोग कहते, भूलकर भी इसे मत बेचना। यह रहेगी तब तक लछमीजी का वासा बना रहेगा।

भगवती बाबू ने ऊंडी सांस सरकाते कहा, लेकिन वह तो चल बसी। अकाल के मारे अनेक कष्ट हुए। अच्छा चारा नहीं मिला, पानी के भी लाले पड़े। चरना-चराना भी बंद हो गया सो बीमार पड़ी, आंख फेर दीं।

उसकी बिटिया अकेली रह गई। उसकी आवाज बड़ी मधुर थी सो नाम रखा ढोलकी। बहुत अधिक लाड़प्यार में पलने से गोदी में पली। रसोई में रही। सोने के कमरे में कतल्ये पर भी सोई। वह काली केरड़ी थी मगर शरीर पर सफेद चिकते और माथे पर काला तिलक था। सब लाड़प्यार से ढोलकी कहते।

सच है, मित्रों के बीच मित्रों की हजारों स्मृतियां होती हैं पर वे उनके रहते अस्तित्व नहीं ले पाती हैं और नकारा रहती हैं लेकिन जब मित्र नहीं होते हैं तब वे एक-एक कर, पता नहीं कैसे, कहां से अवतरित हों अपना अस्तित्व दिये उनके अभाव में रूठे मन को रसीला बनाती पाती हैं। - **म. भा.**

एचडीएफसी बैंक ने पूरे भारत में 100 नई शाखाएं खोलीं

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने घोषणा की हैं कि उसने एक दिन में पूरे भारत में 100 नई शाखाएं खोली हैं। नई शाखाएं 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैले 67 शहरों/कस्बों में खोली गईं। इनमें से लगभग 45 प्रतिशत शाखाएँ अर्ध-शहरी और ग्रामीण भौगोलिक क्षेत्रों में हैं।

नई शाखाओं को बैंक के एमडी और सीईओ शशिधर जगदीशन द्वारा डिजिटल रूप से लॉन्च किया गया। प्रतीक शर्मा, शाखा बैंकिंग प्रमुख, मध्य भारत और बैंक के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। चालू वित्त वर्ष में बैंक ने अब 425 खुदरा शाखाएं खोली हैं। 15 दिसंब तक, बैंक के वितरण नेटवर्क में 3177 शहरों/कस्बों में 6,758 खुदरा शाखाएं, चार डिजिटल बैंकिंग इकाइयां और 17076 एटीएम शामिल थे।

एचडीएफसी बैंक ने उम्मीद जताई है कि विस्तारित वितरण नेटवर्क से इसके व्यवसायों में वृद्धि को समर्थन मिलेगा और बैंक को देश भर में अपने ग्राहकों की सेवा करने में मदद मिलेगी। एचडीएफसी बैंक ने पहले विकास की अगली लहर को शक्ति देने के लिए 'प्रोजेक्ट फ्यूचर रेडी' के तहत संगठनात्मक परिवर्तनों का अनावरण किया था। बैंक तीन प्रमुख क्षेत्रों में निष्पादन शक्ति का निर्माण कर रहा है- (ए) बिजनेस वर्टिकल्स, (बी) डिलीवरी चैनल्स, और (सी) टेक्नोलॉजी/डिजिटल। अपने शाखा नेटवर्क के निरंतर विस्तार से बैंक ग्राहक क्षेत्रों में अवसरों को भुनाने और भविष्य के लिए तैयार होने में सक्षम होगा।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 दिसंबर 2022

सम्पादकीय

एक पिंजड़ा-सा शरीर

हमारे शरीर की रचना बड़ी अद्‌भुत है। विद्वानों ने बड़े मनोयोग से इसके कई रूपों-प्रकारों तथा मुहावरों में वर्णन कर न जाने क्या-क्या उपमा दी है। अनेक जन्म-जन्मांतरों में भटकाव खाता अन्त में मानव के रूप में जन्म लेता है और सर्वश्रेष्ठ जीव बनता है।

जन्म लेने पर जो शिशु हंसता दिखता है वह आराम का सुख भोग कर आया है और रोने वाले के लिए कहा जाता है कि वह दु:खी रहा है। मनुष्य अकेला नहीं आकर छाया के साथ आता है जो हर समय लेखाजोखा रखती है और अन्त में उसके साथ ही जाती है।

जैसे कम्प्यूटर में सब कुछ रहता है वैसे ही मृत्युपरान्त यमलोक में मृतक का सारा लेखाजोखा खुलता है। लासण और जूण के माध्यम से पता लग जाता है कि मृतक किस योनि में गया है और कहां से आया है।

हमारे शरीर की रानी जिह्‌वा है और राजा नाक है। सात द्वारों में दो द्वार नाक के, दो आंख के, दो कान के तथा एक मुख द्वार है। ये सात द्वार मनुष्य के हुए। दो द्वार और भी गिनाये जाते हैं जो मल-मूत्र निकासी के साफ-सुथरे नहीं हैं।

इसके अलावा सत्रह नागिनों का पुंज भी मनुष्य को कहा गया है। इनमें जिह्‌वा सबकी मालकीन है और अंगूठा नाग रूप है शक्ल से भी। बीस अंगुलियां हैं हाथ और पांव की।

आदमी की मौत तीन रूपों में कही गई है। नींद मौत जो प्रतिदिन ही हो रही है। यह अस्थायी है। दूसरी बेहोशी जिसमें मरने-जीने का द्वन्द्व चलता रहता है और तीसरी असल मृत्यु जिसके बाद मनुष्य का कोई स्वरूप नहीं रहता।

पत्र पिटारी

शब्द रंजन के 01 दिसम्बर 2022 के अंक 'स्मृतियों के शिखर' में डॉ. महेन्द्र भानावत ने बोराणाजी पर जो मंतव्य लिखा उसके उत्तर में बोराणाजी की यह टीप -

डॉ. महेन्द्र भानावत इस प्रदेश की लोकसृजना व संरक्षण की थाती हैं। मुझे गर्व व गुमेज है कि उन जैसे कलापारखी और चिंतक मित्रों से मिलकर या पढ़कर ऊर्जावान महसूस करता हूं। मेरा मानना है कि संस्कृति और कलाएं किसी भी समाज के जिंदा होने के लक्षण व सबूत हैं। जिस समाज में अपनी कला- साहित्य और लोक-परम्पराओं का सम्मान नहीं होता, उस समाज में रस और आनंद का अभाव ही रहता है। आजकल के व्यक्ति और सामाजिक तनाव इसी संस्कृतिक्षरण व्यवहार के प्रमाण हैं। नजरें घुमाकर चारों ओर देखते हैं तो बड़ा दुख और निराशा नजर आती है। सांस्कृतिक मूल्यों का जिस तरह से ह्रास हो रहा है और कलाओं के नाम पर जो फूहड़ता जगह लेती जा रही है, उसे प्रहरी बनकर कौन रोकेगा? नयी पीढ़ी को अपनी समृद्ध परम्पराओं से कौन अवगत कराते हुए जोड़े रखेगा? अब उन जैसे समर्पित और निष्ठावान लोकधर्मी व्यक्तित्व कहां हैं? कौन अपना घर फूंककर लोक को बचाने के लिए उम्र के इस पड़ाव पर भी जूझ रहे हैं? उनकी व्यापक दृष्टि और लम्बी सेवाओं का अहसास कर अचानक असहज हो गया और सोचने लगा कि लोककला साहित्य का भविष्य क्या होगा? लेकिन उनकी सहज मुस्कान और प्रतिबद्धता भरा चेहरा देखकर संभावनाओं के सकारात्मक भाव की निष्पत्ति हिम्मत बंधाती है।

- रमेश बोराणा

डॉ. सिंघवी एवं डॉ. भानावत को आचार्य भिक्षु सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। तेरापंथ जैन धर्मसंघ के प्रथमाचार्य भिक्षु स्वामी की स्मृति में 02 दिसम्बर 2022 को लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत एवं जैनदर्शनविज्ञा डॉ. सुषमा सिंघवी को आचार्य भिक्षु प्रज्ञा सम्मान प्रदान किया गया।

अपने उद्‌बोधन में मुनि सम्बोधकुमार ने नई पीढ़ी को जैन जीवनशैली से लाभान्वित होने पर जोर दिया। डॉ. भानावत ने अपने को लोकजीवन से जुड़े रहकर निरन्तर कर्मरत रहने को रेखांकित किया जबकि डॉ. सिंघवी ने भिक्षु दर्शन के संस्कारों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

आयोजक संस्था केलवा के भिक्षु आलोक संस्थान के संस्थापक डॉ. के. एल. कोठारी, अध्यक्ष दिनेश कोठारी ने स्वागत करते संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ. एन. एस. राठौड़ की अध्यक्षता में सम्मान किया गया। कार्यक्रम में डॉ. देव कोठारी, लक्ष्मणसिंह कर्णावट, डॉ. एल. एल. धाकड़, डॉ. पी. एम. अग्रवाल, डॉ. एन. एल कच्छारा, डॉ. कर्नल डी. एस. बया, डॉ. ज्योतिपुंज, डॉ. तोतावत, प्रकाश तांतेड़, पुष्पा कोठारी सहित अनेक सुधिजन उपस्थित थे।

पत्रों के आलोक में (3)

डॉ. पूरन सहगल, मनासा के पत्र

मनासा जिन दो नामों से जाना जाता है, उनमें एक नाम तो बालकवि बैरागी का है और दूसरा नाम है डॉ. पूरन सहगल का। एक मिलान में कहें तो बैरागीजी और डॉ. पूरनजी दोनों एक-दूसरे के बिना अपूरण हैं। मेरे पास सौ से अधिक दोनों के पत्र हैं। दोनों के पत्रों में ये दोनों ही हैं।

दोनों महानुभावों से मेरा मिलना भी कई बार हुआ। मनासा में जब बालकवि होते, पूरनजी सुबह की गपशपी चाय उन्हीं के वहां पीते। बीच में कभी-कभी मेरी आवाज पहुंच जाती तो मेरा दिन भी ठहाकी हंसी से शकुनी हो जाता। अब बैरागीजी नहीं हैं तो पूरनजी अकेले पड़ गये हैं। हो-हलो में तो अभी भी कोई कसर नहीं है पर दिन जल्दी-जल्दी ढलता है, अब सब रीता पलता है।

दीवाली, होली तथा सन् संवत के नये वर्ष पर सहगलजी की लिखी शुभ-मंगल पंक्तियांपरक शुभकामनाओं के साथ इधर-उधर की सार-तत्व से जुड़ी खबरें तथा बतकहियों के अलावा जो लेखन-विशेष सम्बन्धी रचनात्मक कार्य किया जा रहा है उसके लिए शोधानुसंधानपरक सामग्री की खोज तथा अन्यों से प्राप्त की जाने वाली सूचनाओं का आदान-प्रदान करते पत्र ही मुख्य होते। जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित होतीं उनकी जानकारी के साथ कभी-कभी हम अपनी पुस्तक भी भेजते। उत्तर में उनकी प्राप्ति तो मिलती ही, कभी-कभी समीक्षात्मक वजनी टिप्पणियां भी हमारा उत्साहवर्धन करतीं।

यहां डॉ. पूरनजी के पत्रों की कुछ जानकारी और पत्रों के अंश प्रस्तुत हैं-

03 जून 1986 के पोस्टकार्ड में वे लिखते हैं-

आपका मेरे प्रति जो अपनत्व है वह मेरा आत्मबल बढ़ाता है। मैं तो इतना प्रयास करता हूं कि, जब मर जाऊं तो आप जैसे कुछ मित्र इतना कह दें कि, 'एक तापस था।' बस मेरी सारी मेहनत सार्थक हो जायेगी।

वैरागीजी दिल्ली गये हैं। उन्हें आपकी 'जिन्हें मैं जानता हूं' का भी समाचार दिया तथा उनके बारे में जानकारी जो मैंने भेजी है वह भी दिखा दी। वे ठहाका लगाकर कहने लगे, अब भानावतजी को तुम्हारे बारे में मुझसे जानकारी मांगना चाहिये।

18 दिसम्बर 1989 के पोस्टकार्ड में लिखा- एक लेखक का मैं याचक हूं। मुझे मिले। लोकजीवन में भैरव का स्थान व पूजा-प्रथा। मेरी सहायता करें। धैर्य की परीक्षा नहीं ली जानी चाहिये।

मैं नीमाड़ के टण्ट्या भील पर काम कर रहा हूं। यह काम ठीक डूंगजी-जवारजी जैसा ही है। टण्ट्या, भीलों और मीणों में बहुत मान्य पुरुष रहा है। आप लोकजीवन के बहुत निकट हैं। मेरा सहयोग करें।

13 जून 1999 के पोस्टकार्ड में लिखते हैं-

इन्दौर आकाशवाणी से रेकार्डिंग के बाद मैं एक मित्र के यहां अतिथि था। वहां आपकी 'पाबूजी की पड़' देखकर प्रसन्न होने की बजाय उदास हो गया कारण कि वह पहले क्यों नहीं दिखी। वार्ता का विषय ही था पाबूजी की पड़ चित्रावण और प्रदर्शन।

इससे भी आगे की बात- वार्ता-लेखन के दौरान जो आलेख तैयार हुआ उसकी जानकारी भी आपके द्वारा पूर्व में दिये गये ज्ञान के आधार पर दी है। उसका उल्लेख भी मैंने किया है।

22 मार्च 2001 का पोस्टकार्ड -

चन्द्रसखी की जानकारी वाले पृष्ठ मिल गये हैं। आप द्वारा प्रेषित गीतों ने मेरे संग्रह को प्रामाणिकता दी है।

05 दिसम्बर 2001 का पोस्टकार्ड इस प्रकार है-

आदरणीय डॉ. महेन्द्र भानावत

सविनय आदर

जब-जब सन्तों पर 'भीर' पड़ती है तब-तब वे प्रभु को पुकारते हैं। मेरा भी कुछ ऐसा ही स्वार्थमय व्यवहार है। 'भीर' पड़ते ही मैं भानावतजी को पुकारता हूं।

चन्द्रसखी मालवा-राजस्थान की कृष्ण-भक्ति कवयित्री हुई है। पिछले शोध में संतवाणी का संकलन करते-करते चन्द्रसखी मेरे जीवन से जुड़ गई। चन्द्रसखी जो पहले से ही भीतर स्थित थी, जाग गई। जैसे उसे कृष्ण ने मोह लिया था, ठीक उसी तरह इस कृष्ण-भक्त ने मुझे मोह लिया है।

भजनों का संग्रह मेरे लिए तो बहुत कठिन है। आपका 'खोजी जीवड़ा' यह काम सरलता से कर सकता है। वैसे है यह बहुत कठिन। बरसाती खड्डे में से 'मुंदरी' ढूंढ़ने जैसा कठिन। कुछ करें। आपका संग्रह टटोलें। मित्रों व सांस्कृतिक संस्थाओं की भी नब्ज देखें। बीकानेर तक डोर हिलानी पड़ेगी। अपनी कविता (पुत्री) कहां है? उसे भी तो यह काम सौंपा जा सकता है। मालवा के अलावा मेवाड़ी-मारवाड़ी भजन भी मिलें तो बात रसीली होगी। मदद करें।

चन्द्रसखी भज बाल कृसन छवि / छव
चन्द्रसखी ब्रजराज की शोभा
चन्द्रसखी की सुणो विनती। आदि

आपके भजन चन्द्रसखी के भजनों की पहचान हैं। आपका अपना अब तक का अनुभव व लोकमय मन मेरा मार्ग प्रशस्त करे।

- पूरन सहगल

18 जुलाई 2001 का लेटर पेड-

एक सूचना चाहिये। बहुत पहले पाठशालाओं में एक प्रार्थना बोली जाती थी-'अम्बावंती खंबावंती, चारी खूंटे सागर वेती'.... मुझे याद पड़ता है, आपकी किसी पुस्तक में भी छपी है। यदि आपके संग्रह में है तो मुझे मिले।

फरवरी 2005 का पोस्टकार्ड-

आपकी पुस्तक 'राजस्थान के लोकदेवी-देवता' बहुत ही धैर्य से पढ़ी है। आपके शोध-धैर्य, श्रम और लोकदृष्टि को नमन। आपके लेखन में जो लोकसाक्ष्य भाव एवं लोकसान्निध्य-भाव है वह अद्‌भुत, अनुपम, सबसे अलग ध्रुव तारे की तरह है। रथ का पहिया रूक जाए तब आपकी यह पुस्तक अलादीन के चिराग की तरह सहयोगी होगी।

आहोई पर लगभग एक पृष्ठ की जानकारी चाहिये। इसी प्रकार केसरिया कुंवर जो भीलों के आराध्य हैं, उन पर भी टीप दें। क्या केसरिया कुंवर, तेजाजी, गोगाजी की श्रेणी के देवत हैं? मेरा एक विद्यार्थी इसी विषय पर शोधरत है। उसे दिशाबोध मिले।

12 अप्रेल 2005 का पत्र-

'जनजातियों के धार्मिक सरोकार' मेरे सामने है। आपके मस्तिष्क-कम्प्यूटर में शोध-अनुभवों की अनेक कथाएं दर्ज हैं। अद्‌भुत हैं आप और आपकी सुदीर्घ शोध-साधना। आपका यह लेखन मेरे लिये प्रेरक होता है। आपके वामन स्वरूप में हिमालय जैसी ऊंचाई व सागर जैसी गहराई का मैं दर्शन करता रहा हूं। आपके शब्द-शब्द में एक ललित रचना निहित होती है। धन्य हैं।

02 जुलाई 2006 का पत्र-

मेरी नवीन कृति 'दशपुर जनपद की लोकमाताएं एवं उनकी अन्तर्कथाएं' छपने के लिए तैयार है। जिस प्रकार पड़ तभी देवत बनती है जब उसकी आंखें उकेरी जाती हैं। मेरी इस पड़ में भी आप आंखें उकेर दें तो बात बन जाए। दशपुर जनपद चित्तौड़ी सीमा से गागरोवी सीमा तक पूरा अरावली पठार है। दक्षिण में रतलामी सीमा तक। इस पुस्तक में 90 लोकमाताओं की जानकारी और उनकी अन्तर्कथाएं संग्रहीत हैं।

04 मई 2007 का पत्र-

जूणजी पर मेरा लेख मिल गया होगा। एक पृष्ठ मिल जाता तो छोटी-सी पुस्तक और मैं दोनों धन्य हो जाते। आप जैसे लोकपुरुष को पाकर लोक, लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति धन्य हुए हैं। यह प्रवाह सदा नीरा सलीला की तरह चला रहे।

20 मई 2008 का पत्र-

लोकजीवन से जुड़ना आनन्द से भी आगे परमानन्द का आभास है। राजस्थान के लोकनृत्य ऐसी नायाब लोकमणि है जिसके आभामंडल से केवल राजस्थान ही नहीं, समूचा लोकसाहित्य और लोककला संस्कृति दैदीप्यमान हुई है।

आपने तो इन सभी नृत्यों को देखा है। उनका आनन्द लिया है। उनके चरित्र को पहचाना है। उनकी गत-मत-गम्मत और ताल-लय की जानकारी प्राप्त की है। प्राप्त ही नहीं की बल्कि उसे जीने का भी प्रयत्न किया है। प्रत्येक लोकनृत्य का समय, स्थान, परम्परा और ऋतु-पर्व तक की परख की है।

बार-बार हमें लगता है। एक खाट पर बैठे डॉ. भानावत हमें नृत्य के गतिमान और प्रतिमान समझा रहे हैं। कभी-कभी तो ऐसा भी लगता है, हम भी उन लोकनर्तकों के साथ ढोलक, झांझ, मजीरे और डफ की ताल पर झूमने-झपकने लगे हैं। यह आपकी वर्णन शैली का कमाल है। लोकसाहित्य में काम करने वाले शोधार्थियों के लिए यह वर्णन शैली प्रेरणा स्रोत है।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (22)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

रामलीला : भरतपुर, 17 मई, 1969

लीलाओं में इधर रामलीला का विशेष महत्त्व है। भरतपुर में लगभग 60 वर्ष से इसकी परम्परा प्रकाशमान है। सन् 1608 में तत्कालीन शासक महाराजा किशनसिंहजी के व्यस्क होने के पूर्व राजमाता श्रीमती गिर्राजकौर के संरक्षण में पं. मयाशंकरजी सुन्दरलालजी ज्ञानी एवं गोपीलालजी वैद्य ने सर्वप्रथम यहां रामलीला

का बीजारोपण किया। उस वक्त यह रामलीला 'सनातनधर्म रामलीला' के नाम से जानी जाती थी। इस समय सरकार द्वारा लीला के नाम से चुंगी वसूल की जाती थी। लगभग ग्यारह वर्ष तक यह रामलीला अस्तित्व में रही। उसके पश्चात् बंद हो गई। सन् 1950 में यह लीला पुन: अस्तित्व में आई मगर पांच वर्ष बाद ही पुन: बंद हो गई। सन् 1960 में श्री युधिष्ठिर प्रसादजी चतुर्वेदी की लीला-प्रेरणा बलवती सिद्ध हुई। फलत: राजगुरु महंत प्रवर गंगादासजी महाराज की साक्षी एवं संरक्षण में यह लीला फिर से फलवती बनी। स्थानीय पुराने लक्ष्मणजी के मंदिर, जिसे वेंकटेश मंदिर भी कहते हैं, के तत्वावधान में 'वेंकटेश रामलीला' नाम से यह लीला जनजीवन में व्याप्त हुई।

इस लीला का आधार गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामचरितमानस ही रहा है। मानस के सभी नाटकीय पदों को सीनवाइज लिखकर यहां के संचालकों ने अलग से एक हस्तप्रति तैयार करली है। इसी के आधार पर यह लीला खेली जाती है । महंत श्री गंगादासजी इसकी मूल आत्मा हैं। नगर के प्रतिभावान बालक एवं युवकों को महीने भर पहले से ही अभ्यास कराया जाता है। चौपाइयां रटाई जाती हैं तथा प्रत्येक छोटी-से-छोटी बात को भी नाटकीय ढंग से दर्शकों के सम्मुख सुथरेपन से प्रस्तुत करने पर बल दिया जाता है।

महंतजी स्वयं अपनी देखरेख में यह सारा काम करवाते हैं। इन्होंने अपनी तीक्ष्ण अनुभूति, पैनी दृष्टि एवं जनजीवन की गहरी पैठ से इस रामलीला को प्रभावशाली धुनें प्रदान की हैं साथ ही उसे धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक तत्वों से मण्डित कर तुलसी के आदर्श को साक्षात् रामसीतामय के रूप में उजागर किया है। रामलीला की पोशाकों में भी महन्तजी महाराज ने ग्रामूलचूल परिवर्तन किया है। पेशेवर रामलीला मण्डलियों में आधुनिक तथा मध्यकालीन जिन बेमेल अप्रासंगिक तथा अर्थहीन पोशाकों का प्रचलन देखा जाता है, उसे त्यागकर महन्तजी ने विशुद्ध रूप से रामायणकालीन प्राचीन सांस्कृतिक पोशाकें अपनाकर रामयुग को साकार किया है।

इस लीला में किसी भी प्रकार के साज शामिल नहीं होते। नृत्य की दृष्टि से भी यह कोरी ही रही है। इसमें अभिनेता स्वयं गायकी द्वारा अपना मंतव्य प्रस्तुत करता है जिसे व्यास अरथाता है। इस रामलीला के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु जब मैंने महन्तजी से लक्ष्मण मन्दिर में भेंट की तो महन्तजी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पहलीबार दर्शन करने पर भी ऐसा लगा कि जैसे महन्तजी से मैं पहले कई बार भेंट कर चुका हूं। नगर के साहित्यिक-सांस्कृतिक कला-चेत्ताओं के सुमेरु महन्तजी प्रत्येक कलाकोविद, विद्वान मनीषी तथा नगरजीवी को अपने यहां पाकर आनन्द निमग्न होते हैं। आतिथ्य देते हैं। प्रसाद बांटते हैं। भोजन खिलाते हैं। चर्चा-विमर्श करते हैं। सुख-दु:ख सुनते हैं और हर प्रकार के सहयोग के लिए सदा लालायित रहते हैं।

दिन में एक, दो, तीन, चार जितनी भी बार मैं वहां गया, उनका स्नेह प्रसाद सौहार्द और सहकार पाया है। और तो और उनके रामरसोड़े की रसोई जीमने का भी मैंने सौभाग्य पाया है। इस रामलीला के प्रमुख स्थलों का भारतीय लोककला मण्डल के लिए रेकार्डिंग भी किया। संवादों के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए महाराजजी ने बताया कि संवादात्मक चौपाइयों को हम उसी संवादमूलक परिवेश में ही अभिनीत करते हैं । उदाहरणार्थ अंगद-रावण संवाद की चौपाई- 'कह दशकंठ कवन तै बन्दर, मैं रघुवीर दूत दशकंधर' में कह दशकंधर भाग जैसे ही अभिनेता गाकर पूरा करता है वैसे ही रावण अभिनेता उसी लय में कवन तै बन्दर पंक्ति पूर्ण करता है। शेष भाग रावण के तुरन्त पश्चात् अंगद बोलता है। यही क्रम संपूर्ण लीला में चलता रहता है। अभिनय को सप्राण तथा जनस्पर्शी बनाने के लिए अभिनेता देश, पीलू, मोहनी तथा वीर व्यंजक ओजस्वी ध्वनि वाली रागरागिनियों में दोहा चौहाई बोलता है किन्तु प्रारम्भ से अन्त तक एकही सनातनी ध्वनि चलती है।

रामलीला के सम्बन्ध में और कुछ जानने के लिए महन्तजी ने मेरा परिचय श्री मोहनलाल 'मधुकर' से कराया। मधुकरजी ने मुझे बताया कि पहले यह लीला एकही स्थान पर न होकर विविध स्थलों पर इसके विविध दृश्य आयोजित किये जाते थे। सनातन धर्मशाला में रामजन्म, खिन्नीघाट से काशीघाट तक केवट प्रसंग, पाईबाग से काशीघाट सेतुबंध रामेश्वर दृश्य, चिमन बगीची में पुष्पवाटिका, दिल्ली दरवाजे में रावण-अंगद संवाद तथा लक्ष्मण-शक्ति प्रसंग तथा विक्टोरिया पार्क, कम्पनी बाग में रावणवध का दृश्य अभिनीत किया जाता था।

प्रसंगानुसार स्थल का यह चयन दर्शकों में रामलीला के हू-ब-हू उन्हीं स्थलों को साकार करता है जिनका रामचरित से सीधा सम्बन्ध रहा है। इससे सामान्य दर्शकों को किसी प्रकार की कल्पना का अवसर नहीं देकर उन्हें घटना, स्थल, पात्र, पोशाक आदि प्रत्येक दृष्टि से साक्षात् रामायणकालीन संस्कृति की अनुभूति कराई जाती है। लोग यही अनुभव करते हैं कि वे उसी समय के अयोध्यावासी हैं और ये सारी घटनाएं उनके समक्ष उसी प्रकार घटित हो रही हैं। ये अभिनयस्थल कुशल कारीगरों द्वारा बांस-बल्लियों तथा लता-पताओं से तैयार किये जाते हैं जिन्हें कौर किनारियों, फर्रियों तथा नाना कपड़ों लत्तों से चित्ताकर्षक बनाया जाता है। राजदरबार के लिए भव्य एवं विशाल भवन खड़े किये जाते हैं। चित्रकूट के लिए तिदरी तथा पंचवटी के लिए पंचवृक्षी पंचदरी बनाई जाती है। यह लीला शरद पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर दीवाली तक चलती है। इसका प्रदर्शनक्रम प्राय: इस प्रकार रहता है-

(1) गणपति पूजन, पृथ्वी का देवताओं के पास जाना एवं स्तुति करना, आकाशवाणी, रामजन्म एवं नामकरण संस्कार।

(2) विश्वामित्र का दशरथ के पास आना तथा राम-लक्ष्मण को लाना, ताड़का-सुबाहु वध, अहिल्योद्धार, राम-लक्ष्मण का पुष्पवाटिका जाना, सीता का गिरिजा पूजन हेतु आना।

(3) धनुषयज्ञ तथा लक्ष्मण-परशुराम संवाद।

(4) राम राज्याभिषेक हेतु दशरथ का वशिष्ठ के पास जाना, मंथरा-केकई संवाद, केकई का वर मांगना तथा राम आदि का वन गमन।

(5) राम-निषाद मिलन केवट संवाद, गंगा पार तथा राम का चित्रकूट गमन ।

(6) भरत आगमन तथा चित्रकूट गमन, राम-भरत संवाद तथा भरत का रामपादुका लेकर अयोध्या लौटना।

(7) पंचवटी निवास, लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखां का नाक-कान काटना, खरदूषण युद्ध, मृगरूप में मारीच का आना, रावण का साधु वेश में प्रवेश, सीता हरण तथा राम-लक्ष्मण का पंपा सरोवर जाना।

(8) बालिवध, सुग्रीव राज्याभिषेक, अंगद, हनुमान, जामवंत आदि का वानर सेना के साथ सीता खोज के लिए प्रस्थान।

(9) हनुमानजी का लंका गमन तथा जानकी मैया से मिलन, लंका दहन ।

(10) राम का लंका प्रस्थान तथा अंगद-रावण संवाद।

(11) लक्ष्मण शक्ति, हनुमान का द्रोणगिरि पर्वत लाना तथा लक्ष्मण का मूर्छा से सचेत होना ।

(12) कुभकरण, मेघनाद, रावण वध, विभीषण राजतिलक।

(13) राम का अयोध्या आगमन, भरतमिलाप एवं राम का राज्याभिषेक ।

(14) मानस का अखण्ड पाठ एवं हरिकीर्तन ।

रामलीला प्रदर्शन के साथ-साथ रामविवाह, भरतमिलाप तथा राम के अयोध्या लौटने के फलस्वरूप इन आनन्द उल्लास के विशेष प्रसंगों पर सवारियों का भी आयोजन किया जाता है। इन सवारियों के लिए रथ सजाये जाते हैं। स्वरूपों की भव्यता के साथ-साथ जन-भावनाओं की उच्चता भी इन सवारियों में छलक पड़ती है। नगर के प्रमुख-प्रमुख मार्गों से उमड़ते जनोल्लास की जय-जयकार के साथ जब सवारी गुजरती है तो साक्षात् रामराज्य की उच्चादर्शता साकार हो उठती है।

श्रद्धालु लोग लीला के विविध स्वरूपों के लिए भोजनादि की व्यवस्था करते हैं, भेटपूजा देते तथा अनेक प्रकार से उनका भक्ति स्वागत करते हैं। पूरे रामलीला समय तक जनता उन्हें विशिष्ट स्वरूपों के रूप में ही देखती-भालती है और स्वरूप भी अपने आपको उस विशिष्ट अभिनेता के रूप में ही पाते हैं जिसका कि उन्होंने अभिनय किया होता है। रामलीला के ये झांकी प्रदर्शन जनजीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सात्विक सोपान बन जीवन शुद्धि के अवलंब बनते हैं ।

अन्य रामलीलाओं में कामा की रामलीला भी उल्लेखनीय रही है। इसके संस्थापक बाबा बलदेव प्रसाद थे। यह लीला भरतपुर की लीला के सदृश प्रदर्शित की जाती है। वर्तमान में यहाँ की व्यास कमेटी इसका संचालन करती है। प्रमुख कार्यकर्ताओं में गोपाल पुजारी तथा रमण पंडित के नाम लिये जा सकते हैं। डीग में पं. नारायणलालजी ने रामलीला का प्रवर्तन किया। वर्तमान में सरावगी कपूरचंदजी, हरिकृष्णजी तथा हरप्रसादजी इसके नियोजक हैं। इस लीला में मूल पाठ पंडित बोलता है। पात्र उसे अरथाते हैं। पहले भरतपुर नरेश भी इसमें सहयोग करते थे। दौपुरा में तोताराम की पेशेवर मण्डली है जो बुलाने पर प्रदर्शन देती है। बटीकरा में रामजीलाल शर्मा तथा मंडासा में भी एक अन्य रामजीलाल शर्मा की लीलाएँ उल्लेख्य हैं।

भरतपुर : 17 मई, 1969

होरंगे :

होली के पश्चात पंचमी से अष्ठमी तक इधर होरंगों का आयोजन भी बड़ा महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मेलोंठेलों के रूप में

स्त्री-पुरुष मिलकर नृत्य-गीतों तथा विविध स्वाँगों के रूप में उमड़ पड़ते हैं। इनके साथ बम, ढोल तथा माठ बजाये जाते हैं। बम भीमकाय ढोल विशेष होता है। यह चार पहियों की गाड़ी पर होता है। इस कारण इसे चौपई भी कहते हैं। इन्हें गूजर, अहीर, जाट तथा माली लोग बजाते हैं। अन्य उत्सव समारोहों में भी ये बम बजाये जाते हैं। इन्हें रखना और बजाना गौरव समझा जाता है ।

इन वाद्यों के साथ लोग लम्बी-लम्बी छड़ियां लेकर नृत्याभिनय प्रस्तुत करते हैं। कुछ लोग स्त्री वेश में भी अपने कौतुक दिखाते हैं। नृत्यों के साथ रसिये गाये जाते हैं। कहीं-कहीं राधाकृष्ण की सवारी भी निकाली जाती है। पुरुष अपने सिर पर ढाल रखकर स्त्रियों से होरंगा मिलाते हैं। तब स्त्रियां लाठियों से उन पर प्रहार करती हैं। कुछ लोग बड़े-बडे मटकों पर बजती हुई थालियों के सहारे अपने हाथों में लम्बी-लम्बी छड़ियां लेकर उछलते फुदकते हुए नाना नृत्यों में निमग्न हो जाते हैं । रसिया का एक उदाहरण-

यसुदा तेरे लाल ने मेरी मटकी फोरी रे
हम दधि बेचन जात विन्दावन मिल ब्रज गोरी रे।
गैल रोकी के ठाडौ पायौ कीनी झकझोरी रे ।।
दही सब खाय मटुकिनी फोरी बांह मरोरी रे ।
चोरी तो सब जगह होय तेरे ब्रज में जोरी रे ।।
लै नंदरानी हमने तेरी नगरी छोड़ी रे ।
नाम बिगरो तिहारो बे शरमाई घोड़ी रे ।।

- क्रमश :

बाजार / समाचार

बीजेएस संगठन नहीं एक विचारधारा है : लूंकड़

उदयपुर (ह. सं.)। झीलों की नगरी में भारतीय जैन संघटना के 17-18 दिसंबर को आयोजित हो रहे राष्ट्रीय अधिवेशन की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र लूंकड़ ने प्रेसवार्ता में बताया कि बीजेएस एक संगठन नहीं वरन विचार धारा है। संगठन ने 37 वर्षों के इतिहास में मुख्य रूप से आपदा प्रबंधन, सामाजिक विकास और शैक्षणिक कार्यों से संबंधित राष्ट्रीय स्तर पर कार्य किए हैं।

संस्था में एक लाख से अधिक कार्यकर्ता एवं 500 से अधिक विशेषज्ञ प्रोफेशनल व कर्मचारी पूना स्थित कार्यालय में संस्थापक शांतिलाल मुथ्था के निर्देशन में कार्य करते हैं। लूंकड़ ने बताया कि संस्था का प्रत्येक दो वर्षों में राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित होता है। अधिवेशन केवल इंवेन्ट नहीं वरन सम्पूर्ण राष्ट्र में मूवमेन्ट का कार्य करेगा जिसमें भारत के 100 जिलों में जल संवर्धन का एमओयू, मूल्यवर्धन शिक्षा का स्केल तैयार करना तथा सामाजिक क्षेत्र के ज्वलंत मुद्दों पर चिंतन-मंथन करना मुख्य है।

बीजेएस प्रदेशाध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने बताया कि अधिवेशन स्थल ओकेजन गार्डन में 40 हजार स्क्वायर फीट के विशाल डोम में 3200 प्रतिनिधियों के बैठने की व्यवस्था की जा रही है। 50 हजार स्क्वायर फीट का भोजन पाण्डाल तैयार किया जा रहा है। बाहर से आने वाले प्रतिनिधियों के लिए होटलों में 900 कमरें आरक्षित किए गए हैं। फत्तावत ने बताया कि अधिवेशन का मुख्य आकर्षण 17 दिसम्बर को सायं 4.30 बजे ओकेजन गार्डन से डीपीएस स्कूल मैदान तक निकलने वाली विशाल वाटर रैली है। इसमें यूथ ब्रिगेड के 51 युवा साथी आगे बुलेट पर रैली को एस्कोर्ट करेंगे। उसके पीछे पांच घोड़े, दो बग्गियां जिनमें अधिवेशन का लोगो एवं जैन प्रतीक चिन्ह होगा। उनके पीछे 12 राज्यों के 100 जिलों की झांकियां अलग-अलग चारपहिया वाहनों पर संचालित होगी।

प्रेसवार्ता में प्रदेश महामंत्री अभिषेक संचेती, अधिवेशन के मुख्य संयोजक महेन्द्र तलेसरा, अरविंद जारोली, धीरेन्द्र मेहता, प्रवीण नवलखा, दीपक सिंघवी, रेनप्रकाश जैन, राजेश भादविया, सुधीर चित्तौड़ा, अरूण मेहता, विनोद फांदोत, भूपेन्द्र गजावत, यशवंत कोठारी, चन्द्रप्रकाश चोरडिया, तुषार मेहता आदि उपस्थित थे।

गीतांजली में वर्टिगो क्लिनिक की शुरुआत

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में वर्टिगो क्लिनिक का उद्घाटन ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर गीतांजली हॉस्पिटल के सी.ई.ओ प्रतीम तम्बोली, मेडिकल सुप्रीटेनडेंट डॉ. कर्नल सुनीता दशोत्तर, डॉक्टर्स, व स्टाफ मौजूद रहे।

प्रतीम तम्बोली ने बताया कि वर्टिगो एक प्रकार का संतुलन विकार है। यह समस्या कान के सामान्य भाग में कुछ खराबी होने के कारण होती है। यदि किसी व्यक्ति को चक्कर आना, सिर घूमना, गिर जाने का डर, शरीर का संतुलन बनाने में तकलीफ, सिर हिलाने पर देखने में तकलीफ, चक्कर, सिरदर्द और असंतुलन महसूस होना, करवट बदलने पर चक्कर आना आदि की समस्या है तो उसे जांच व उपचार की आवश्यकता है।

'कथा तरंग' का लोकार्पण

कथा तरंग और प्रौढ़ शिक्षण समिति के संयुक्त तत्वावधान में अशोक आत्रेय, हेमंत शेष और सुभाष दीपक की 22 कहानियों से सजे कथा संग्रह 'कथा तरंग' का लोकार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने कहा कि कहानीकारों ने कहानी के परम्परागत ढांचे को तोड़कर नए ढंग से लिखने का प्रयास किया है। नए प्रयोग किए गए हैं। भूमिका के लिए हेमंत शेष की सराहना करते हुए कहा कि इसके माध्यम से कहानी को नए सिरे से समझा जा सकता है। अशोक आत्रेय की कहानी प्रयोगशील है तो सुभाष परंपरागत कहानियों के निकट हैं और हेमंत शेष की कहानियां विचारशील है। अध्यक्ष कृष्ण कल्पित ने कहा कि यह नए गद्य, नई कहानी, समकालीन कथा के प्रति एक विनम्र विद्रोह है। हिन्दी गद्य को आज जब नष्ट किया जा रहा है और पुरस्कृत किया जाता है तब ऐसी कहानियां नई आशा जगाती है। डॉ. राजाराम भादू, राजेन्द्र बोड़ा, प्रभाकर गोस्वामी, गजेन्द्र रिझवानी, विजय तैलंग, महेश स्वामी और डॉ. सम्बोध गोस्वामी ने भी विचार व्यक्त किए।

-फारूक आफरीदी

लक्ष्यराजसिंह को पर्यटन पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। विश्व पर्यटन दिवस पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ और पर्यटन मंत्री किशन रेड्डी ने महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को जीवित विरासत संरक्षण, संवर्धन और उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार प्रदान किया।

डॉ. सरीन को गोल्ड मेडलिस्ट पद्म अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल के बाल विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सरीन द्वारा विगत चार दशक में किये गये शैक्षणिक एवं चिकित्सकीय योगदान के लिए 2022 के नेशनल गोल्ड मेडलिस्ट पद्म अवार्ड के लिए चयन किया गया।

चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। सूक्ष्मतम डायरी के लिए चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकार्ड द्वारा प्रमाणपत्र, स्टीकर, मैडल, बेच और स्मृति चिन्ह भेंट कर महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने बधाई दी।

डॉ. आचार्य को माणक अलंकरण

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाड़िया विवि में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कुंजन आचार्य को जोधपुर में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा 7100 रूपये राशि के साथ प्रशस्तिपत्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान किया गया।

विनय भाणावत सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। करेंसी मैन विनय भाणावत को विश्व स्तरीय करेंसी नोटों के संग्रह हेतु प्रदत्त पदक, स्मृतिचिन्ह, प्रमाणपत्र संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट द्वारा प्रदान किया गया।

प्रो. सारंगदेवोत को मदनमोहन मालवीय डायमंड जुबली अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के कुलपति कर्नल प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत को विज्ञान, प्रौद्योगिकी व तकनीक के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए इंदिरा गांधी दिल्ली टेक्नीकल यूनिवर्सिटी ने मदनमोहन मालवीय डायमंड जुबली अवार्ड से सम्मानित किया।

यह सम्मान केन्द्रीय जलशक्ति राज्यमंत्री प्रहलादसिंह पटेल ने दिया। हाल ही में विश्व जल आयोग स्वीडन ने प्रो. सारंगदेवोत को भारत का कमिश्नर मनोनीत किया।

कलेक्ट्री में शांति-अहिंसा प्रकोष्ठ शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान सरकार द्वारा कलेक्ट्री परिसर में जिला शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के संचालन के लिए कक्ष आवंटित किया गया। इसका उद्घाटन शहर एवं देहात जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान अध्यक्ष गोपालकृष्ण शर्मा, जिला देहात कांग्रेस के निवर्तमान अध्यक्ष लालसिंह झाला व पूर्व विधायक सज्जन कटारा ने किया। इन नेताओं ने जिला शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के संयोजक पंकज कुमार शर्मा को तिरंगा उपरना, गांधी टोपी एवं सूत की माला पहनाकर पदभार ग्रहण कराया।

वृद्धाश्रम का अवलोकन

उदयपुर (ह. सं.)। तारा संस्थान द्वारा संचालित श्रीमती कृष्णा शर्मा आनन्द वृद्धाश्रम का भाजपा देहात जिलाध्यक्ष चन्द्रगुप्त चौहान और पूर्व पार्षद राजेश सिंघवी ने अवलोकन किया। चौहान ने कहा कि तारा संस्थान में वृद्धजनों की जो सेवा की जा रही है उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। मैं तो समझ रहा था कि कोई छोटा-मोटा वृद्धाश्रम होगा लेकिन जिस प्रकार से इस वृद्धाश्रम को चलाकर आप वृद्धजनों की सेवा कर रहे हैं, उसका अन्यत्र उदाहरण मिलना मुश्किल है। यहाँ के वृद्धजन शाही महल जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सिंघवी ने कहा कि तारा संस्थान द्वारा की जा रही वृद्धों की सेवा अतुलनीय है।

तारा संस्थान की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गोयल ने कहा कि आप लोगों के सहयोग से ही हम यह कार्य कर पा रहे हैं। मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीपेश मित्तल ने बताया कि संस्थान द्वारा उदयपुर, दिल्ली, मुम्बई, फरीदाबाद व लोनी (गाजियाबाद) में नि:शुल्क आई हॉस्पीटल का संचालन किया जा रहा है। इस अवसर पर तेहसीन बेग, मोनिका अग्रवाल, श्रीमती अनिता गोयल मौजूद थे।

प्रो. जैन और डॉ. धींग सम्मानित

उदयपुर (ह.सं.)। भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसायटी, उदयपुर के पूर्व अध्यक्ष प्रो. प्रेमसुमन जैन एवं सदस्य डॉ. दिलीप धींग को शंखेश्वरपुरम (पालीताना, गुजरात) में हुए अंजनशलाका महोत्सव में जीवनोपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारतीय जैन संघ की ओर से आयोजित कार्यक्रम में आचार्य लब्धिचंद्र सागर सहित सैकड़ों साधु-साध्वियों की मौजूदगी में दोनों को मुक्ताहार, श्रीफल, सम्मान-पत्र और 11 हजार रुपये की सम्मान-राशि भेंट की गई।

डॉ. जैन और डॉ. धींग द्वारा जैन दर्शन में उल्लेखनीय योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया।

जिंक को जलवायु और जल परिवर्तन के लिए 'ए' रेटिंग

उदयपुर (ह. सं.)। हिन्दुस्तान जिंक को जलवायु और जल परिवर्तन से कुशल प्रबंधन के लिए वैश्विक पर्यावरण गैर-लाभकारी सीडीपी द्वारा क्लाइमेट चेंज और वॉटर सिक्योरिटी श्रेणी में 'ए' रेटिंग दिया गया। यह कंपनी द्वारा किए गए स्थायी प्रयास जल, भूमि, वायु गुणवत्ता, जलवायु और जैव विविधता पर उनके प्रभाव को कम करने और इस हेतु किये गये प्रभावी प्रयासों की मान्यता है ।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि हमें जलवायु और जल परिवर्तन को कम करने की दिशा में समर्पित प्रयासों के लिए सीडीपी जलवायु 'ए' सूची में शामिल किया गया हैं। यह पारदर्शिता और हमारें द्वारा किये गये प्रयासों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का उदाहरण है। संचालन के दौरान, हमने स्थायी भविष्य के निर्माण पर निरंतर ध्यान देने के साथ अपनी दक्षता और उत्पादकता में वृद्धि करते हुए इन मुद्दों को हल करने के लिए लगातार नवाचार किये है।

लोकनृत्यों का लोकजीवन से गहन सम्बन्ध

-जगदीशचन्द्र माथुर

भारत दीर्घकाल से विभिन्न परम्पराओं का भंडार माना जाता है। लोकनृत्य भी इनमें से एक है। इतिहास की अनेक भली-बुरी स्थितियों का सामना करके भी वे आज जीवित हैं। शास्त्रीय नृत्यों का जन्म इन्हीं लोकनृत्यों से हुआ है।

लोकनृत्यों का लोकजीवन से गहन सम्बन्ध है और वही उनका प्रेरणा-स्रोत है। ग्राम जीवन का सच्चा चित्र उनमें देखने को मिलता है और उनसे गांव के आचार-विचारों का पता चलता है। उल्लास और स्वच्छंद अभिव्यक्ति लोकनृत्यों की विशेषता है। उनमें गूढ़ नियमों का बंधन नहीं। सीधा और व्यापक प्रभाव लोकनृत्यों की वह विशेषता है, जो उन्हें विकसित शास्त्रीय कला से पृथक करती है।

लोकनृत्यों की बहार में कई सदियों के जन-जीवन की झांकी मिलती है। इनमें बनावट नहीं होती बल्कि वन्य-पुष्पों को ताजगी और सुन्दरता होती है। **मंदिरों में और त्योहारों पर पुराने ढंग से नाचने का काम अब कुछ खास टोलियां करती हैं। मेले-तमाशे और हाट-बाजारों में नाच करने वाली टोलियां पेशेवर नहीं, खास मौकों पर पैसा लेकर नाचती हैं।** जिन लोगों के सामाजिक विकास में सदियों का अंतर है उनके नृत्यों को देखने से लगता है, मानों अनेक युग सामने से गुजर रहे हों। इनमें विशाल जनसमूहों के युग-युग के जीवन और भावों की झाँकी मिलती है।

उड़ीसा के शबर लोग नाच में जो इकट्ठी पंक्ति बनाते हैं, उसमें जुलूस का आभास होता है। बहुत से नृत्यों में जो एक या दो पंक्तियां बनाई जाती हैं, उनमें बारात, शवयात्रा या देवता की रथयात्रा के अगवानी या रक्षकदल का आभास होता है।

नृत्यों में स्त्री-पुरुषों के जोड़ी बनाने या खड़े होने के इतने अधिक ढंग हैं कि उसमें एक ही शैली खोजना व्यर्थ होगा। पश्चिम के बालरूम नाच जैसे अलग-अलग जोड़े इन नृत्यों में नहीं होते। साधारणतया पुरुष और स्त्रियां अलग-अलग पंक्तियों में खड़े होते हैं या दो लड़कों के बीच में एक लड़की रहती है। साथियों के हाथ और कन्धे पकड़ने के तरीके भी अनन्त हैं। जैतिया पहाड़ी के नत्य में टोली रचना और हाथ पकड़ने के ढंग जटिल हैं जबकि संथालों के बहुत सीधे पर चाहे ढंग जो भी हो, इसमें व्यक्तियों को नहीं, पूरी टोली को महत्त्व दिया जाता है।

बिहार के ओरांव लोगों के कदम नाचने में ऐसे पड़ते हैं कि जैसे कोई काँतर अपने सौ पैरों से सरकती हो। 'आओ' नागा पहले एक कदम दाहिने चलते हैं फिर एक कदम पीछे और फिर झटके से घुटना मोड़ कर दाहिने पांव को दो बार जमीन पर पटकते हैं। शीतप्रधान हिमाचल प्रदेश के नृत्यों में शुरू में बहुत छोटे-छोटे कदम रखे जाते है और बहुत धीरे-धीरे नाच की गति बढ़ती है। कुछ नृत्यों में तो नर्तक अपने पांव एक ही स्थान पर जमा कर रखते हैं और धड़ को ही वृत्ताकार घुमाते हैं।

भारत में संस्कृति की धाराओं का ऐसा मिश्रण हुआ है कि अनेक नृत्यों को किसी एक श्रेणी में रखना कठिन है। हमारे देश में **सबसे अधिक नृत्य काम-धन्धों से संबंधित हैं।** ये सबसे सरल भी होते हैं जैसे **बंगाल और**

बिहार के संथालों के नाच में, जिनमें प्रतीकों का अधिक सहारा लिये बिना **फसल की बुवाई और कटाई को दर्शाया जाता है।** कुछ नृत्यों का **सौराष्ट्र के तिप्पनी** नाच के समान, किसी एक धंधे से सम्बन्ध है। तिप्पनी **नाच में औरतें मुंगरियों से फर्श कूटने का अभिनय करती हैं और हल्की मुंगरियां लेकर नाचती हैं। आसाम को बोडो-कछारी जाति का नाच कैजामा-पनई है। जंगल में पेड़ काटने या पेड़ के नीचे से लाल चीटियों को हटाने का अभिनय किया जाता है। शिकार मनुष्य जाति का सबसे पुराना धंधा है और इस पर अनेकों नृत्य हैं, जिनमें से अधिकांश बड़े जोरदार और मरदाने होते हैं ।**

फसल की पहली कटाई को एक अनुष्ठान या रस्म का रूप दिया जाता

अनेक लोकनृत्यों के साथ के गीतों में एक ही कड़ी बार-बार दोहराई जाती है, और कभी-कभी ये गीत एकरस जान पड़ते हैं। इन नाचों में विविधता, एक तो ढोल की मस्त थापों से आती है और दूसरे नर्तकों के रंगीन वस्त्राभूषण और श्रृंगार से। लोकनृत्यों के ढोल के भी अनेक रूप हाते हैं। आसाम की गारो जाति के लोगों का ढोल इतना बड़ा होता है कि एक आदमी उसे दोनों ओर से बजा नहीं सकता। मध्यप्रदेश के मुरियों का छोटा सा ढोल होता है जिसकी आवाज बड़ी तेज होती है। नर्तक टोलियों की बांसुरी, तारवाद्य और तुरही आदि देखने में बड़े अच्छे लगते हैं पर ढोल ही नर्तकों का आह्वान करता है, नृत्य की लय और गति का संचालन करता है और नृत्य में उल्लास उत्पन्न करता है।

जलवायु के अनुसार नर्तकों के वस्त्रों में भिन्नता होती है। हिमाचली और भोटिया नर्तक पूरे कपड़े पहनते हैं। जुआंग बहुत कम कपड़े पहनते हैं। मनकों की मालाओं और अन्य गहनों के कारण वे बहुत अच्छे लगते हैं। वनवासी नर्तक का शिरोधान उसके जंगल के साथियों-पशुपक्षियों का अनुकरण करता है पर बस्ती में रहने वाले नर्तक अपने हरे भरे खेतों की सुनहली फसलों जैसी रंगीली पगड़ियां बांधते हैं।

नृत्य के समय ताली बजाने से, एक साथ पाँव रखने में ही मदद नहीं है। शिकार उदर-पालन का एक साधन होने पर भी, युद्ध के भाव से गहरा सम्बन्ध रखता है। एक लोकनृत्य पर दूसरे लोकनृत्यों की छाया पड़ जाती है या उनका मिश्रण हो जाता है। कोई काम संस्कार या रीति रसम का रूप धारण कर लेता है, तो उसके अधार पर बने नृत्य में भी विशेष अभिप्राय और शिल्प आ जाते हैं। इन रसमी या अनुष्ठान नृत्यों के शहरी दर्शक इस अभिप्राय को नहीं समझ पाते क्योंकि वे नृत्य के साथ होने वाले गीतों का अर्थ नहीं जानते।

जिन नृत्यों ने रीतिरस्म के स्तर से उठकर धार्मिक नृत्यों का रूप ले लिया है उन्हें एक सूत्र में बांधनेवाली दो प्रवृत्तियां हैं। **असंख्य ग्रामीण जनता अब भी मंत्र-तंत्र और चमत्कार-चिकित्सा में विश्वास करती हैं। आसाम के देवधानी और राजस्थान के तेराताली नाच में इसी आवेश या देवता के आने का चित्रण होता है। इस नृत्य को प्राय: एक ही व्यक्ति करता है। शुरू में यह धीरे-धीरे अंग चलाता है और गुनगुनाता है। क्रमश: उसका स्वर ऊंचा होता जाता है और** मिलती, बल्कि इसमें हाथों का सुन्दर उपयोग भी है, जैसे गुजरात के गरबा नृत्य में। लोकनर्तक नृत्यों में हाथों का क्या उपयोग करते हैं यह एक अत्यंत रोचक विषय है। कश्मीर और उत्तरप्रदेश के पर्वती नर्तकों के हाथ नाचते समय उनके रूमालों और शालों से खेलते रहते है। छड़ी भी यही काम देती है।

महाराष्ट्र और गुजरात के 'गोफ' नृत्य में नर्तक एक खम्भे में बड़ी कुशलता से रंगबिरंगी डोरियां लपेटते और खोलते हैं। महाराष्ट्र की लेजिम से बहुत अच्छी ध्वनि भी निकलती है और लय द्वारा अंगचालन में भी सहायता मिलती है। लकड़ी के घोड़ों का नाच राजस्थान (कच्छी घोड़ा) और तंजोर में होता है। गोंड लोग लकड़ी पर चढ़कर ऐसी फुर्ती में नाचते हैं जैसे वह लकड़ी नहीं शरीर का एक अंग ही हो। जैसे लोकजीवन के और काम मिलकर किये जाते हैं, वैसे लोकनृत्य भी। कोई सूत्रधार या संगीत निर्देशक नहीं होता। प्राय: एक अगुवा होता है। 'अखाड़ा' या गांव के मैदान में नाचते-नाचते, नर्तक अनायास ही लय सीख लेते हैं।

अब पुराना जातीय जीवन समाप्त हो रहा है। सामाजिक और धार्मिक कृत्य और संस्कार भी अपना प्रभाव और उद्देश्य खो बैठे हैं। मशीन युग की समस्त नीरसता मनुष्य की आमोदप्रियता, जवानी की उमंग और उसके हर्ष-विषाद से जन्म लेने वाले गीतों को नयापन दे रही है।

नृत्य की गति बहुत बढ़ जाती है और अन्त में वह एकदम शिथिल हो जाता है। कुछ नाच डरावने होते हैं और दर्शक सम्मोहित सा हो जाता है। **मिथिला की स्त्रियां अकाल निवारण के लिए 'जट-जटनी' नृत्य करती हैं। आसाम में मच्छरों को भगाने के लिए 'महान' नाच किया जाता है।**

मनुष्य ने प्रकृति को कोमल और भीषण अनेक रूपों में देखा। वह विश्वंभरा जगद्धात्री माता भी है और संहारिका चण्डिका भी। वह भक्ति और भय दोनों भाव उत्पन्न करती है और इन्हीं से तंत्र-मंत्र और उर्वरता के नृत्य निकले। गुजरात के गरबा नृत्य में बीच में जो मिट्टी का कलश दीपक के साथ रखा जाता है, वह भी मातृत्व का प्रतीक है।

नदी और समुद्र तट के निवासी प्रकृति को पहाड़ों और घाटियों के निवासियों से भिन्न रूप में देखते हैं। प्रकृति के शान्त और प्रचण्ड रूपों की प्रतिक्रिया भी भिन्न होती है। मणिपुर का लाइहरानोबा लोकनृत्य उर्वरता के उत्सव या अनुष्ठान से निकला।

बाद में इसमें भगवान कृष्ण की लीला और शिव की कथा मिल गई। केरल के मोपला मुसलमानों के कल्कोली नाच के समय जो गीत गाये जाते हैं, उनमें हिन्दू देवताओं के भी नाम आ जाते हैं।

युद्ध-नृत्यों या मारू-नाचों को एक सूत्र में बांधनवाली कड़ी नहीं मिलती। कुछ जातियों में युद्ध-नृत्य होते ही नहीं। युद्ध-नृत्य के नाम से प्रचलित अनेक नाच-युद्ध की प्रेरणा या उत्तेजना नहीं उत्पन्न करते बल्कि युद्ध-प्रवृत्ति को उदात्त रूप देते हैं। केरल के वैलक्कली नृत्य में कुरुक्षेत्र की लड़ाई का अभिनय किया जाता है। इसमें विजयी पाण्डवों के विशालकाय पुतले बनाये जाते हैं और पराजित कौरवों का अभिनय करने वाले ढाल-तलवार लेकर नाचते हैं।

साधारणत: समझा जाता है कि नागाओं के सबसे अच्छे नाच युद्धनृत्य होते है, पर ऐसा नहीं है। वास्तविक युद्ध-नृत्य तो आसाम की लुशाई पहाड़ियों की लेखर जाति का 'सवलकिया' नाच (युद्ध में आहत लोगों की आत्मा का नृत्य) है। बंगाल के रायबन्शी नर्तक बारातों में बड़ी अच्छी कलाबाजी या पैतरे दिखाते हैं। आसाम की धुलिया जाति में कलाबाजी और पैतरों का और भी ज्यादा प्रचलन है। नृत्यों को खेल समझने की प्रवृत्ति सबसे अधिक बस्तर (मध्यप्रदेश) के मुरिया जाति में है। इनके हुल्की, मन्द्री और करसना नाचों का सम्बन्ध धार्मिक कृत्यों से नहीं है और न इनका कोई अन्य गूढ़ अभिप्राय या अर्थ है।

सबसे आकर्षक तो नर्तकों के टोली बांधने का ढंग है, जो नाच में गतिमान होने पर और भी मनोहर लगता है। सबसे प्रचलित रचना मण्डल या गोल घेरा है। आसाम के बिहु नाच में यह घेरा सीमित रहता है और गुजरात के गरबा नाच में स्वच्छन्द।

रोटी के आकार में.....

(पृष्ठ एक का शेष)

काश! रोटी का कोई ऐसा पेड़ होता। उस बच्चे की इच्छा पूरी करने वाला! आज अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में लंगर के लिए रोटियों की व्यवस्था को हम चाहें तो ऐसा पेड़ कह सकते हैं।

रोटी को लेकर लोकपरम्परित जीवन में बहुत से विधि निषेध और आवर्जनाओं का संसार ही है जो एक पृथक विषय होगा। पर यहां रोटी के युग्मराग के संदर्भ में एक दो का उल्लेख जरूरी है।

कोई वक्त था जब रसोई में पहली रोटी गाय की और पीछे की रोटी कुत्ते की बनती थी। गाय की रोटी पर भोजन सामग्री और घी-शक्कर रख उससे टुकड़े तोड़ चूल्हे में डाल 'बैसान्दुर'; शायद वैश्वानरद्ध किया जाता था। आज सबकी जगह न तो गाय तक पहुंच है न कुत्ते तक। लोकपरम्परा अपने विकल्प खोलती है। आज जिन घरों में ये रोटियां बनती हैं, पसियों के लिए रख देते हैं। किसी भी घर में कभी 'तीन रोटी' नहीं बनती न तेरह ही। जरूरी हो तो पीछे तवे पर छोटी सी टिकरी डाल चार-चौदह की संख्या पूरी करते हैं। इसी तरह तीन रोटी बचने पर कओरदान कठउआ में तीसरी रोटी आधी कर संख्या चार कर दी जाती है। मैंने कई पुरखिनों से ऐसा करने का कारण पूछा तो उनका उत्तर था, इससे परिवार तीन-तेरह हो जाता है। पर मुझे तो इसमें युग्मराग को खंडित न होने देना ही दीखता है।

सबसे पीछे सिकी रोटी खाना लोकशास्त्र में निषिद्ध था। ऐसा कहा जाता है कि पिछली रोटी खाने से बुद्धि 'पिछाई' हो जाती है। किसी बात के होने पर घटना घट जाने पर सोचने वाली। मर्दों को पिछली रोटी कभी भी खाने को नहीं दी जाती थी।

पूरे महाराष्ट्र में खाने की थाली में कभी भी पूरी रोटी; पोळी नहीं परोसी जाती। उसके चार टुकड़े जो कि स्वाभाविक रूप से तिकोने होते किए जाते हैं और एक-एक, दो-दो करके परोसे जाते हैं। कभी चार भी, पर कम ही। इसके पीछे किसी भी व्यक्ति के पूरी रोटी, खास कर बच्चों के, न खा पाने की बात दीखती है। खिलाने का आग्रह भी पूरा होता है। वैसे भी महाराष्ट्र की 'पोळी' 'भाखरी' बड़ी होती है। पूरी रखने पर थाली भर जाती है।

रोटी से जुड़े हर प्रान्त, अंचल, जनपद, गांवों के, ऐसे विश्वासों की सत्यता पर कुछ भी अगर कहा जा सकता है तो इतना कि ये आज हमारे लिए अनजान हुए अर्थों में किसी-न-किसी रूप में सृष्टि के युग्मराग के तारों के पूरक रहे होंगे और हैं भी। और, रोटी पूरी कथा अनंता है।

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

SUPER SPECIALITY DEPARTMENTS

- CARDIOLOGY
- CARDIO THORACIC AND VASCULAR SURGERY
- HAND & RECONSTRUCTIVE MICROSURGERY
- GASTROENTEROLOGY AND HEPATOLOGY
- PLASTIC, BURN & COSMETIC SURGERY
- NEUROLOGY
- NEURO SURGERY
- NEPHROLOGY
- PEDIATRIC SURGERY
- UROLOGY

Goverment schemes at PIMS: चिरंजीवी मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना | RGHS Rajasthan Government Health Scheme | PM-JAY | जननी सुरक्षा योजना

Phone : 0294-3010000, 8696440666 | Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in | Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in

FIND YOUR FUTURE

SAI TIRUPATI UNIVERSITY
UMARDA, UDAIPUR
Approved under Section 2(f) of UGC Act 1956

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Approved by NMC

M.B.B.S. (4.5 Years + 1 Year Internship)

MD/MS (3 Years)

M.Sc. in Medical Sciences [Non-Clinical] (3 Years)

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING
Approved by INC

G.N.M. (3 Years)

B.Sc. Nursing (4 Years)
- Medical Surgical
- Community Health
- Child Health (Pediatrics)
- Mental Health (Psychiatrist)
- Obstetric & Gynaecological

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
Approved by PCI

- D.Pharm. (2 Years)
- B. Pharm. (4 Years)

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
- B.P.T. (4.5 Years)
- M.P.T. (2 Years)

VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY & MASS COMMUNICATION
Fashion Designing, Interior Designing
- Diploma
- B.Voc.
- B.Des.
- Advance Diploma
- M.Voc.
- M.Des.

Fine Arts • BFA, MFA

Journalism & Mass Communication
- D-JMC
- BA-JMC
- MA-JMC

VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT
MBA (Hospital Administration & Health Care Management)

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCE
Diploma (2 Years) Approved by RPC
- Radiation Technology
- ECG Technology
- Operation Theater Technology
- Cath Lab Technology
- Medical Laboratory Technology

RESEARCH PROGRAM
Ph.D.(Nursing and Non-Clinical Medical Sciences)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in | Phone: 9587890082, 9358883194

Umarda Railway Station Road, Umarda, Udaipur-313015 (Raj.)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।